CHRONICLE

Nurturing Talent Since 1990

वैकल्पिक इतिहास

सिविल सेवा के पाठ्यक्रम पर आधारित

संघ लोक सेवा आयोग तथा सभी राज्य लोक सेवा आयोगों की प्रारंभिक व मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन एवं वैकल्पिक विषय तथा यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ., टीजीटी, पीजीटी, राज्य स्तरीय प्रवक्ता परीक्षा, विश्वविद्यालय स्तर की परीक्षाओं एवं अन्य समकक्ष प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी

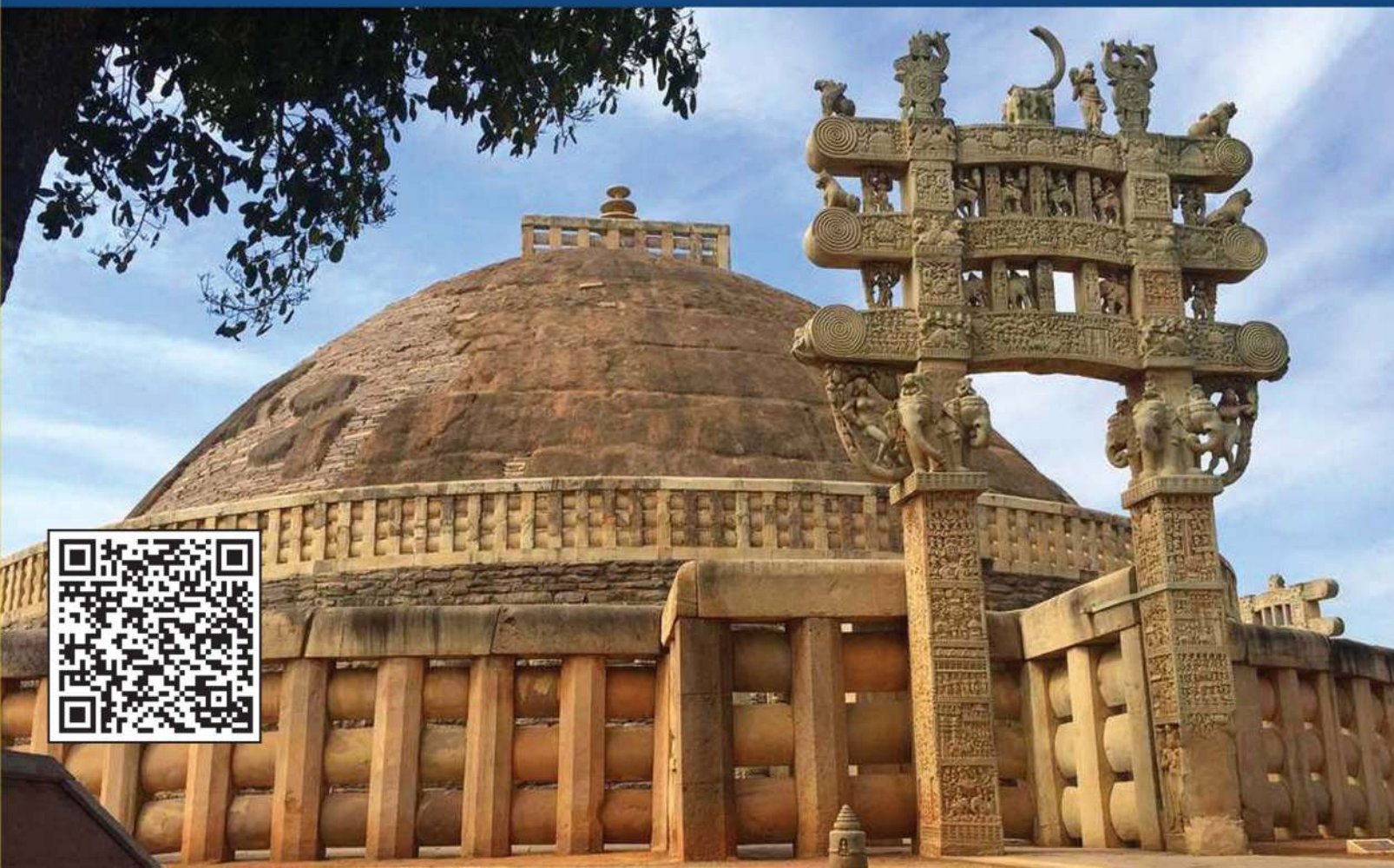

अनुक्रमणिका

प्राचीन भारत

1. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत.....1–12

➲ **प्राचीन ऐतिहासिक स्रोतों का वर्गीकरण** 3
➲ **प्राचीन इतिहास के प्रमुख स्रोत**..... 4
➲ **पुरातात्विक स्रोत** 4
1. अभिलेख..... 4
2. स्मारक..... 5
3. मुद्राएं..... 5
➲ **साहित्यिक स्रोत**..... 6
(क) धार्मिक साहित्य..... 6
(1) वेद या श्रुति संहिता..... 6
(2) ब्राह्मण 7
(3) आरण्यक..... 7
(4) उपनिषद..... 7
(5) महाकाव्य..... 7
(6) पुराण..... 7
(7) स्मृति ग्रंथ..... 8
(8) बौद्ध साहित्य..... 8
(9) जैन साहित्य..... 9
(ख) धर्मेतर भारतीय साहित्य..... 9
❖ अर्थशास्त्र..... 9
❖ अन्य धर्मेत्तर साहित्य 9
❖ संगम साहित्य 9
➲ **विदेशी यात्रियों के वृत्तांत**..... 10
1. यूनानी लेखक..... 10
2. चीनी यात्रियों के वृत्तांत..... 10
3. अरबी यात्रियों के वृत्तांत..... 11
➲ **प्राचीन भारतीय इतिहास का लेखन**..... 11
❖ औपनिवेशिक उपागम..... 11
❖ राष्ट्रवादी उपागम 12
❖ मार्क्सवादी दृष्टिकोण 12
➲ **विदेशी लेखकों की खामियां**..... 12

2. भारत में प्रागैतिहासिक संस्कृतियां.....13 – 21

➲ **परिचय**..... 13
➲ **पुरापाषाण काल**..... 13
❖ प्राक् इतिहास..... 14
❖ निम्न-पुरापाषाण काल 14
❖ मध्य-पुरापाषाण काल..... 15
❖ उच्च-पुरापाषाण काल..... 15
❖ पाषाण युग..... 15
❖ संस्कृति के लक्षण..... 15
❖ मुख्य स्थल..... 15
❖ महत्व, उपकरण, विशेषताएं..... 15
❖ पुरापाषाणकालीन जीवन..... 16
➲ **मध्यपाषाण काल** 16
❖ मध्यपाषाण कालीन जीवन..... 17
➲ **उत्तर या नवपाषाण काल** 17
❖ नवपाषाणकाल की प्रादेशिक विशिष्टता..... 18
❖ **नवपाषाण कालीन जीवन**.....20

3. सिंधु घाटी सभ्यता.....22 – 37

➲ **सिंधु घाटी सभ्यता का उद्गम**..... 23
➲ **सिंधु घाटी सभ्यता का विस्तार** 23
❖ आरंभिक हड़प्पाकालीन बस्तियां..... 24
❖ हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख विशेषताएं..... 25
❖ हड़प्पा नगरों के उत्थान में कृषि की भूमिका..... 26
➲ **नगर योजना एवं भवन निर्माण योजना**..... 26
❖ सिन्धु प्रदेश..... 26
❖ मोहनजोदड़ो..... 26
❖ हड़प्पा..... 27
❖ कालीबंगा..... 27
❖ लोथल 27
❖ नगर नियोजन की विशेषताएं..... 27
➲ **सामाजिक जीवन** 28
❖ सामाजिक वर्गीकरण तथा संगठन 28
❖ भोजन तथा खाद्य सामग्री..... 28
❖ वस्त्र तथा पहनावा..... 28
❖ आभूषण तथा श्रृंगार..... 28
❖ आमोद-प्रमोद के साधन..... 29
❖ विविध गृहापयोगी उपकरण तथा सामग्री..... 29
❖ **नारी की स्थिति**.....29
➲ **राजनैतिक जीवन** 29
➲ **आर्थिक जीवन** 30

❖ **कृषि** **30**
❖ **पशुपालन** **30**
❖ **उद्योग तथा व्यापार** **31**
❖ **माप तौल के साधन** **31**
❖ **मुहरें** **31**
❖ मुद्रा 32
❖ अन्य देशों के साथ व्यापारिक संबंध 32

➲ **धार्मिक जीवन** **32**
❖ परम पुरुष अथवा शिवोपासना 32
❖ वृक्ष पूजा 33
❖ पशु एवं नागपूजा 33
❖ अग्निपूजा तथा पशुबलि 33
❖ जलपूजा 33
❖ अंधविश्वास 34
❖ शव विसर्जन 34

➲ **कलात्मक अभिरुचि** **34**
❖ मूर्तिकला 34
❖ धातु कृतियाँ 34
❖ पाषाण कला 34
❖ गुरिया निर्माण कला 34
❖ चित्रकला 35
❖ मुद्रा निर्माण कला 35
❖ लेखन कला 36
❖ संगीत तथा नृत्यकला 36

➲ **हड़प्पा सभ्यता का पत्तन** **36**
❖ हड़प्पा सभ्यता के पतन के प्रमाण 36
❖ हड़प्पा सभ्यता के पत्तन से संबंधित विद्वानों का मत ... 36

4. सिंधु क्षेत्र के बाहर की संस्कृतियां ..... 38 – 43

❖ ताम्र पाषाणिक संस्कृति का वर्गीकरण 38
1. गेरुए चित्रित बर्तनों की संस्कृति 38
2. काले एवं लाल मृद्भांड संस्कृति 38
3. चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति 38
4. उत्तरी काले पॉलिश वाली मृद्भांड संस्कृति 39

➲ **ताम्रपाषाणिक संस्कृतियां** **39**
❖ कायथ संस्कृति 39
❖ आहड़ अथवा बनास संस्कृति 39
❖ सवालदा संस्कृति 40
❖ मालवा संस्कृति 40
❖ जोर्वे संस्कृति 40
❖ पूर्वी भारत में ताम्रपाषाण संस्कृतियां 41

➲ **ताम्रपाषाण संस्कृतियों की विशेषताएं** **41**
❖ अर्थव्यवस्था 41
❖ धर्म एवं विश्वास 41
❖ दाह संस्कार 42
❖ सामाजिक संगठन 42
❖ अन्य विशेषताएं 42

➲ **भारत में लौह युग** **42**
❖ उत्तर भारत में लौह युग 43
❖ दक्षिण भारत में लौह युग 43

➲ **दक्षिण भारत की आरंभिक कृषि बस्तियां** **43**

5. वैदिक सभ्यता ..... 44 – 70

➲ **वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.)** **44**

➲ **आर्यों का विस्तार** **44**
❖ ऋग्वेद के महत्वपूर्ण शब्द 44

➲ **आर्यों का मूल निवास से संबंधित विद्वानों का मत** **45**
❖ आर्यों के मूल स्थान, भारत 45
❖ आर्यों का मूल स्थान, उत्तरी ध्रुव 45
❖ आर्यों के आगमन से संबंधित सिद्धांत 46
❖ आर्यों का मूल निवास, यूरोप 46
❖ आर्यों का मूल स्थान, मध्य एशिया 46

➲ **वैदिक ग्रंथ** **47**
❖ वेद 47
❖ ऋग्वेद 47
❖ सामवेद 47
❖ यजुर्वेद 48
❖ अथर्ववेद 48
❖ ब्राह्मण ग्रंथ 48
❖ आरण्यक ग्रंथ 48
❖ उपनिषद 49

➲ **सामाजिक जीवन** **49**

➲ **आर्यों का राजनैतिक संगठन** **51**

➲ **आर्थिक जीवन** **53**

➲ **धार्मिक जीवन** **53**

➲ **उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.)** **54**

➲ **राजतंत्र का विकास** **54**

➲ **सामाजिक जीवन** **55**
❖ सिंधु एवं वैदिक सभ्यता में अंतर 56
❖ वैदिक संस्कृति 56
❖ सिंधु संस्कृति 56
❖ ऋगवैदिक से उत्तर वैदिक काल में समाज की बदलती स्थिति 57
❖ वर्ण व्यवस्था का विकास 57
❖ विभिन्न वर्णों की स्थिति 58
❖ पुरुषार्थ 59
❖ आश्रम व्यवस्था 59
❖ संस्कार 60
❖ विवाह 60
❖ आर्थिक जीवन 61

➲ **धार्मिक जीवन एवं दर्शन** **62**

➲ **उपनिषद से संबंधित विचारधारा** **63**

➲ **सूत्र साहित्य** **63**
❖ सामाजिक जीवन 64
❖ आर्थिक जीवन 65

❖ राजनैतिक संगठन 65
❖ धार्मिक जीवन 66

➲ **महाकाव्य कालीन सभ्यता 67**
❖ राजनैतिक व्यवस्था 67
❖ सामाजिक दशा 69
❖ आर्थिक दशा 69
❖ धार्मिक जीवन 70

6. महाजनपदों से नंद तक राज्य निर्माण ..... 71 – 105

➲ **महाजनपदों का उदय 71**
➲ **महाजनपदों की शासन-पद्धति 73**
➲ **गणराज्यों की प्रशासनिक व्यवस्था 74**
❖ गणराज्यों की दुर्बलताएं 74
❖ शाक्य गण 75
❖ लिच्छविगण 75
➲ **मगध साम्राज्य का उदय 75**
➲ **हर्यक वंश (544 ई. पू. से 412 ई. पू. तक) 75**
❖ बिम्बिसार (544-492 ई.पू.) 75
❖ अजातशत्रु (492-460 ई.पू.) 76
❖ उदयिन (लगभग 460-444 ई.पू.) 77
➲ **शिशुनाग वंश (लगभग 412-344 ई.पू.) 77**
❖ शिशुनाग 77
❖ कालाशोक (काकवर्ण) 78
➲ **नन्दवंश (344-324/23 ई.पू.) 78**
❖ महापद्म 78
❖ धनानंद 78
➲ **मगध राज्य की सफलता के कारण 79**
➲ **नगरीकरण (छठीं शताब्दी ईसा पूर्व) 80**
➲ **ईरान तथा यूनान के आक्रमण 80**
❖ पारसी आक्रमण (ईरानी) 80
❖ ईरानी आक्रमण का प्रभाव 81
❖ यूनानी आक्रमण 81
❖ सिकन्दर के आक्रमण का प्रभाव 82
➲ **धार्मिक आंदोलन एवं धार्मिक संप्रदाय 83**
❖ **धार्मिक आन्दोलन की पृष्ठभूमि 83**
➲ **जैन धर्म: शिक्षाएं एवं दर्शन 85**
❖ जैन धर्म का त्रिरत्न 86
❖ जैन दर्शन 87
❖ जैन-संघ 87
❖ जैन धर्म की विशेषताएं 88
❖ **जैन धर्म का महत्व एवं मानवता के सन्दर्भ में प्रासंगिकता 88**
➲ **बौद्ध धर्म 88**
❖ गौतम बुद्ध का जीवन परिचय 88
❖ बौद्ध धर्म की प्रचार 90
❖ बौद्ध धर्म की विशेषताएं तथा सिद्धान्त 90
❖ संघ का संगठन 91
❖ महात्मा बुद्ध के जीवन की पांच घटनाएं (बौद्धधर्म का प्रतीक) 91
❖ हीनयान और महायान में अंतर 92
❖ बौद्ध परिषदें 92
➲ **बौद्ध धर्म के प्रसार के कारक 93**
❖ बौद्ध धर्म व जैन धर्म में तुलना 93
❖ बौद्ध व वैदिक धर्म में तुलना 93
❖ बौद्ध धर्म के पतन के कारण 94
❖ बौद्ध धर्म का महत्व 94
➲ **बुद्धकालीन सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था 94**
❖ सामाजिक जीवन 95
❖ आर्थिक जीवन 95
❖ राजनैतिक व्यवस्था 96
➲ **प्रमुख दर्शन 97**
❖ सांख्य दर्शन 97
❖ योग दर्शन 99
❖ महाभारत में उल्लिखित शिक्षा केन्द्रों के रूप में आश्रमों के विभाग 99
❖ न्याय तथा वैशेषिक दर्शन 100
❖ वैशेषिक दर्शन 101
❖ मीमांसा दर्शन 102
❖ वेदान्त दर्शन 104
❖ उपनिषद 104
❖ उपनिषदों का महत्व 105
❖ गीता दर्शन 105

7. मौर्य साम्राज्य ..... 106 – 139

➲ **मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत 106**
1. साहित्यिक स्रोत 106
➲ **अर्थशास्त्र में वर्णित प्रमुख तथ्य 107**
2. विदेशियों के यात्रा वृतांत 108
3. पुरातात्त्विक साक्ष्य 109
➲ **मौर्यों की उत्पत्ति 109**
❖ **ब्राह्मण साहित्य 109**
❖ **बौद्ध ग्रंथ 109**
❖ **अर्थशास्त्र 110**
➲ **चन्द्रगुप्त मौर्य (322 ई.पू. - 298 ई.पू.) 110**
❖ मगध पर आधिपत्य 111
❖ मलयकेतु के विद्रोह का दमन 111
❖ सेल्यूकस के साथ संघर्ष 111
❖ दक्षिण भारत की विजय 112
❖ साम्राज्य विस्तार 112
➲ **बिन्दुसार 'अमित्रघात' (298 ई.पू. से 273 ई. पू.) 112**
➲ **सम्राट अशोक (273 ई.पू. से 232 ई.पू.) 113**
❖ साम्राज्य विस्तार 116
❖ अशोक के अभिलेखों के खोजकर्ता 116
❖ अशोक का धर्म परिवर्तन 117
❖ अशोक के शिलालेखों में धम्म की विषय-वस्तु 117

❖ अशोक के 15वें शिलालेख में उल्लिखित समकालीन शासक 117
❖ धर्म का स्वरूप 118
❖ धम्म की विशेषताएं 119
❖ अशोक द्वारा धम्म प्रचार 120
❖ मौर्यकालीन स्थानीय पदाधिकारी 121
❖ इतिहासकारों के अनुसार अशोक के धम्म का स्वरूप 121
❖ अशोक के सात स्तंभ लेखों में उल्लिखित मुख्य विषय 121
❖ अशोक की यात्राएं/महत्वपूर्ण कार्य 121

➲ अशोक के प्रशासकीय सुधार 122
➲ मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण 123
➲ अशोक के शासनकाल का मूल्यांकन 126
➲ चन्द्रगुप्त का शासन-प्रबंधन 126
❖ मंत्रि-परिषद 127
❖ मंत्री 127
❖ मौर्यकालीन कुछ अन्य सहायक अधिकारी व कर्मचारी 127
❖ समाहर्ता 128
❖ नगरों का प्रबंधन 129
❖ ग्राम प्रशासन 129
❖ न्याय व्यवस्था 129
❖ गुप्तचर विभाग 129
❖ वित्त व्यवस्था 129
❖ सैन्य प्रबंधन 130
➲ मौर्यकालीन व्यवस्था 130
❖ सामाजिक व्यवस्था 130
❖ आर्थिक व्यवस्था 132
➲ मौर्यकालीन कर व्यवस्था 134
❖ धार्मिक व्यवस्था 135
❖ मौर्यकालीन शिक्षा और साहित्य 135
❖ लिपि 136
➲ मौर्य कला एवं स्थापत्य 136
1. दरबारी अथवा राजकीय कला 136
❖ अशोक और ईरानी स्तंभ लेखों में अंतर 137
❖ बौद्ध स्तूपों के प्रकार 137
❖ गुहा-विहार 138
2. लोककला 138

8. मौर्योत्तर भारत ..... 140 – 159
❖ मौर्योत्तर काल के स्रोत 140
➲ शुंग राजवंश (185 ई.पू.-75 ई.पू.) 140
❖ प्रशासनिक संरचना 141
❖ धार्मिक नीति 141
➲ कण्व वंश (75 ई.पू.-30 ई.पू.) 141
➲ हिन्द-यूनानी (इंडो-ग्रीक) 141
❖ भारत पर प्रभाव 141
➲ हिन्द-पार्थियन (पहलव) 142
➲ कुषाण 142
❖ कनिष्क (78-105 ई.) 143
❖ कुषाण काल के सिक्कों पर अंकित देवता 143
❖ कुषाणों की धार्मिक नीति 144
➲ शक 144
➲ मौर्योत्तर भारत का समाज 144
❖ जातियों का विकास 145
➲ सातवाहन वंश एवं प्रायद्वीप में राज्य निर्माण 146
❖ स्रोत 146
➲ आन्ध्र सातवाहन 147
❖ सातवाहन प्रशासन 147
❖ समाज 148
❖ आर्थिक जीवन 148
❖ कला एवं स्थापत्य 148
❖ धर्म 148
❖ शिक्षा-भाषा-साहित्य 148
➲ मौर्योत्तर काल की अर्थव्यवस्था 148
❖ व्यापार एवं उद्योग-धन्धे 149
❖ गिल्डों एवं व्यापार संगठनों की भूमिका 150
❖ नगरों का विकास 150
➲ मध्य एशिया तथा उत्तर भारत से संपर्क का प्रभाव 151
➲ मौर्योत्तर कालीन धर्म 151
❖ बौद्ध धर्म 152
❖ जैन धर्म 153
❖ वैष्णव धर्म 154
❖ शैव धर्म 155
❖ शैव धर्म के विभिन्न सम्प्रदाय 156
❖ लिंगायत सम्प्रदाय 157
❖ शक्ति धर्म 157
➲ मौर्योत्तर काल की कला एवं संस्कृति 157
❖ स्तूप 158
❖ गुफा वास्तुकला 158
❖ मूर्तिकला 158
❖ गांधार कला केन्द्र 158
❖ मथुरा कला 159
❖ अमरावती कला 159
❖ चित्रकला 159
❖ मौर्योत्तर कालीन साहित्य 159

9. संगम काल ..... 160 – 168
➲ संगमयुगीन संस्कृति 160
❖ उपलब्ध संगम साहित्य 161
➲ राज्यों का उदय 162
❖ चेर राज्य 162
❖ चोल राज्य 163
❖ पाण्ड्य राज्य 163
➲ संगमकालीन प्रशासनिक व्यवस्था 164
➲ सामाजिक जीवन 165

❖ कृषि वर्ग 166
❖ व्यापारी वर्ग 166
❖ मृतक संस्कार 166
➲ **आर्थिक जीवन 166**
❖ व्यापार एवं वाणिज्य 167
❖ राज्य की आय का मुख्य स्रोत 167
➲ **धार्मिक जीवन 167**

10. गुप्त साम्राज्य ..... 169 – 198

➲ **गुप्त साम्राज्य का स्रोत 169**
❖ साहित्यिक स्रोत 169
❖ अभिलेखीय स्त्रोत 170
❖ विदेशी स्रोत 170
➲ **गुप्तों की उत्पत्ति 170**
➲ **राजनीतिक इतिहास 171**
❖ देवगुप्त तृतीय, विष्णुगुप्त द्वितीय और जीवितगुप्त द्वितीय 178
➲ **गुप्त साम्राज्य का पतन 178**
➲ **गुप्त प्रशासन 178**
❖ **न्यायिक अधिकारी** 181
➲ **प्रशासनिक विभाग 181**
➲ **भूमि एवं राजस्व 182**
➲ **आर्थिक जीवन 183**
➲ **धार्मिक अवस्था 184**
❖ गुप्त काल के समय की जाने वाली उपासना 186
➲ **सामाजिक जीवन 189**
➲ **साहित्य और विज्ञान 189**
❖ गुप्त काल के साहित्यकार 190
❖ विज्ञान तथा तकनीक 192
➲ **कला और स्थापत्य 193**
❖ वास्तुकला–मन्दिर 193
❖ मूर्तिकला 194
❖ मृण्मूर्ति कला 195
❖ धातु कला 195
➲ **चित्रकला 195**
❖ अजन्ता की चित्रकला 195
❖ बाघ की चित्रकला 196
➲ **फाह्यान का भारत विवरण 196**

11. गुप्त काल के परवर्ती राज्य 199–214

➲ **वाकाटक राजवंश 199**
❖ **इतिहास के स्त्रोत 199**
❖ **विन्ध्यशक्ति (255–275 ई.) 199**
❖ प्रवरसेन प्रथम (275–335 ई.) 199
❖ प्रधान शाखा 200
➲ **बासीम शाखा 201**
❖ हरिषेण (475–510 ईस्वी) 201
➲ **मालवा कायशोधर्मन 201**
➲ **कन्नौज का मौखरि राजवंश 202**
❖ इतिहास के स्रोत 202
➲ **राजनीतिक इतिहास 202**
❖ **हरिवर्मा** 202
❖ **आदित्यवर्मा** 203
❖ **ईश्वरवर्मा** 203
❖ **ईशानवर्मा** 203
❖ **सर्ववर्मा** 203
❖ **अवन्ति वर्मा** 203
❖ **ग्रहवर्मा** 203
➲ **मौखरि वंश का पतन 204**
➲ **थानेश्वर का वर्द्धन या पुष्यभूति राजवंश 204**
❖ साहित्य स्रोत 204
❖ विदेशी विवरण 204
❖ अभिलेखीय स्रोत 205
❖ मुहरें 205
➲ **राजनीतिक इतिहास 205**
❖ प्रभाकरवर्द्धन 205
❖ राज्यवर्द्धन 206
❖ हर्षवर्द्धन (606–647 ईस्वी) 206
❖ हर्ष के सैनिक अभियान 206
❖ **साम्राज्य विस्तार** 208
➲ **शासन प्रबन्ध 209**
❖ **सम्राट** 209
❖ **सामन्त तथा मंत्रिपरिषद** 209
❖ प्रशासनिक व्यवस्था 209
❖ दण्ड विधान 210
❖ राजस्व प्रशासन 210
❖ सेना 210
➲ **धार्मिक जीवन 211**
❖ कन्नौज की सभा 211
❖ प्रयाग सभा 211
➲ **सामाजिक जीवन 212**
➲ **आर्थिक दशा 212**
➲ **शिक्षा और साहित्य 212**
❖ चीनी यात्री ह्वेनसांग का भारत विवरण 213
❖ चीनी यात्री इत्सिंग का भारत विवरण 214

12. महत्वपूर्ण शब्दावली ..... 215 – 218

❖ विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली 215
❖ हड़प्पा कालीन पारिभाषिक शब्दावली 215
❖ ऋग्वैदिक पारिभाषिक शब्दावली 215
❖ उत्तर वैदिक कालीन पारिषाषिक शब्दावली 215
❖ वैदिकयुगीन शब्दावली 216
❖ महाजनपदकालीन पारिभाषिक शब्दावली 216

❖ महत्वपूर्ण शब्दावली..... 216
❖ धार्मिक क्रान्ति से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली..... 216
❖ संगमकालीन राजस्व व्यवस्था से संबंधित शब्दावली.... 217
❖ मार्यकालीन पारिभाषिक शब्दावली..... 217
❖ गुप्तकालीन पारिभाषिक शब्दावलियां..... 218
❖ प्राचीन इतिहास के शब्दावली..... 218

मध्यकालीन भारत

1. प्रारंभिक मध्यकालीन भारत के प्रमुख राजवंश..... 219 – 242

➲ **मध्यकालीन भारत..... 219**
❖ ऐतिहासिक स्रोत 221
❖ राजपूतों की उत्पत्ति..... 221
❖ 1 विदेशी इतिहासकारों का मत..... 221
❖ 2 भारतीय इतिहासकारों का मत 222

➲ **गुर्जर-प्रतिहार वंश..... 222**
❖ ऐतिहासिक स्रोत..... 222
❖ गुर्जर- प्रतिहार के उत्त्पति 223
1. विदेशी इतिहासकारों का मत 223
❖ भारतीय इतिहासकारों का मत..... 223
❖ गुर्जर प्रतिहार वंश के प्रमुख शासक..... 223
❖ प्रतिहार साम्राज्य का पतन 224

➲ **गहड़वाल राजवंश..... 224**
❖ गहड़वाल इतिहास के स्रोत 224
❖ राजनैतिक इतिहास..... 224

➲ **शाकम्भरी का चहमान वंश..... 225**
❖ राजनैतिक इतिहास..... 225

➲ **मालवा का परमार राजवंश..... 226**
❖ ऐतिहासिक स्रोत..... 226
❖ राजनैतिक इतिहास..... 227

➲ **जेजाकभुक्ति के चन्देल..... 228**
❖ ऐतिहासिक स्रोत..... 228
❖ राजनैतिक इतिहास..... 228
❖ स्थापत्य कला..... 229

➲ **त्रिपुरी का कलचुरि-चेदि राजवंश..... 229**
❖ ऐतिहासिक स्रोत..... 229
❖ राजनैतिक इतिहास..... 230

➲ **गुजरात का चालुक्य अथवा सोलंकी वंश..... 230**
❖ ऐतिहासिक स्रोत..... 230
❖ राजनैतिक इतिहास..... 230

➲ **राष्ट्रकूट वंश..... 231**
❖ ऐतिहासिक स्रोत..... 231

➲ **विभिन्न राष्ट्रकूट शाखाएं..... 232**
❖ मान्यखेत का राष्ट्रकूट वंश..... 232
❖ कृष्ण प्रथम (758-773 ई.)..... 232
❖ गोविन्द द्वितीय (773-780 ई.)..... 233
❖ ध्रुव 'धारवर्ष' (780-793 ई.)..... 233
❖ गोविन्द तृतीय (793-814 ई.)..... 233
❖ अमोघवर्ष (814-878 ई.)..... 233
❖ कृष्ण द्वितीय (878-914 ई.)..... 234
❖ इन्द्र तृतीय (914-929 ई.)..... 234
❖ कृष्ण तृतीय (939-968 ई.)..... 234
❖ खोट्टिग (968-972 ई.)..... 234
❖ कर्क द्वितीय (972 ई.-974 ई.)..... 234
❖ प्रशासन..... 234
❖ राजा..... 234
❖ मन्त्री..... 235
❖ राज्य..... 235
❖ सीधे प्रशासित क्षेत्र..... 235
❖ सेना..... 235
❖ राजस्व के स्रोत..... 235
❖ धार्मिक स्थिति..... 235
❖ साहित्य..... 236
❖ कला..... 236
❖ एलोरा का कैलाश मंदिर..... 236

➲ **बंगाल का पाल वंश..... 237**

➲ **शाही वंश..... 238**

➲ **उड़ीसा..... 239**

➲ **कश्मीर..... 239**
❖ कल्हन की राजतंरगिणी..... 239

➲ **कच्छपघट..... 239**

➲ **इस्लाम का उदय..... 240**

➲ **भारत-अरब संबंध..... 240**
❖ सिंध पर अरबों के आक्रमण..... 241
❖ सिंध विजय का भारत पर प्रभाव..... 242

➲ **भारत का अरबों पर प्रभाव..... 242**

2. 750 से 1200 ई. के मध्य की सांस्कृतिक प्रवृत्तियां ..... 243 – 259

➲ **सामंतवाद : उद्भव तथा विकास..... 243**
❖ सामन्तवाद के विकास में सामाजिक-आर्थिक कारक... 243
❖ सामन्तवाद का प्रभाव 245

➲ **कृषक एवं राजनैतिक संरचनाएं..... 246**

➲ **अर्थव्यवस्था..... 247**
❖ उत्तर भारत की आर्थिक संरचना..... 247
❖ दक्षिण भारत की आर्थिक संरचना..... 248
❖ उद्योग..... 249

➲ राजनीतिक संरचना 249
➲ मंदिरों तथा मठ संस्थाओं का महत्व एवं प्रभाव व मंदिर कला..... 250
❖ मन्दिरा कला 251
❖ स्थापत्य कला..... 251
❖ चित्रकला..... 252
➲ सामाजिक गतिशीलता की सीमा..... 253
❖ सामाजिक स्थिति..... 253
➲ अल्बेरूनी के काल का 'भारत'..... 256
➲ शंकराचार्य..... 257
➲ विभिन्न साहित्य 258
❖ दार्शनिक साहित्य 258

3. द. भारत के राजवंश (750.1200 ई.).....260 – 280
➲ चोल राजवंश..... 260
❖ ऐतिहासिक स्त्रोत..... 260
❖ अभिलेख..... 261
❖ राजनीतिक इतिहास..... 261
❖ आदित्य प्रथम (871-907 ई.) 261
❖ परांतक प्रथम (907-955 ई.)..... 261
❖ राजराज प्रथम (985-1014 ई.)- 262
❖ राजेन्द्र प्रथम (1014-44 ई.)..... 263
❖ राजाधिराज प्रथम (1044-52 ई.)- 263
❖ राजेन्द्र द्वितीय (1052-64 ई.)..... 264
❖ वीर राजेन्द्र (1064-70 ई.)..... 264
❖ अधिराजेन्द्र (1070 ई.)- 264
❖ कुलोतुंग प्रथम (1070-1120 ई.)-..... 264
❖ विक्रम चोल (1120-35 ई.)..... 265
❖ कुलोतुंग द्वितीय (1133-50 ई.)..... 265
❖ राजराज द्वितीय (1150-73 ई.)..... 266
❖ कुलोतुंग तृतीय (1178-1216 ई.)- 266
❖ राजराज तृतीय..... 266
❖ राजेन्द्र तृतीय..... 266
➲ चोल प्रशासन..... 266
❖ राजस्व प्रशासन..... 267
❖ सैन्य संगठन..... 268
❖ न्याय व्यवस्था..... 268
❖ नाडू की भूमिका..... 268
❖ स्थानीय स्वशासन..... 269
❖ परान्तक प्रथम का उत्तर मेरूर अभिलेख..... 269
❖ उर..... 269
❖ ग्राम सभा..... 269
❖ ग्राम सभाओं की लोकतान्त्रिक भूमिका..... 270
➲ चोलकालीन धार्मिक दशा..... 270
❖ भारतीय संस्कृति का भारत से बाहर प्रसार में योगदान 271
➲ चोलकालीन साहित्य..... 271
➲ कला एवं स्थापत्य..... 272
➲ आर्थिक स्थिति 273
➲ मंदिरों की भूमिका..... 275
➲ सामाजिक स्थिति..... 275
➲ अन्य राजवंश..... 276
➲ पाण्ड्य राजवंश..... 278
1. संगमकालीन पाण्ड्य राज्य..... 278
2. प्रथम पाण्ड्य साम्राज्य..... 278
❖ द्वितीय पाण्ड्य साम्राज्य..... 279

4. तुर्कों का आगमन..... 281 – 286
➲ महमूद गजनवी..... 282
❖ महमूद के आक्रमण के उद्देश्य..... 283
❖ गजनवी आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थाएं..... 283
❖ राजनीतिक व्यवस्था..... 283
❖ आर्थिक व्यवस्था..... 283
❖ सामाजिक संगठन 284
❖ धार्मिक स्थिति..... 284
➲ मोहम्मद गोरी का आक्रमण..... 284
➲ तुर्कों की सफलता और राजपूतों की पराजय के कारण. 285
❖ राजनीतिक कारण..... 285
❖ सैनिक कारण..... 285
❖ समाजिक-सांस्कृतिक कारण..... 285

5. गुलाम शासकों के अंतर्गत दिल्ली सल्तनत ..... 287 – 296
➲ गुलाम वंश..... 288
❖ मामलूक वंश (1206-1290ई.)..... 288
❖ कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-10 ई.) 288
❖ आरामशाह (1210 ई.)..... 289
❖ शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (1210-1236 ई.) 289
❖ इल्तुतमिश का योगदान प्रसार एवं सुदृढीकरण..... 289
❖ चालीस अमीरों का दल (तुर्कान-ए-चहलगानी)..... 291
❖ रुकनुद्दीन फिरोजशाह (1236 ई.)..... 291
❖ रजिया (1236-40 ई.)..... 291
❖ मुइजुद्दीन बहरामशाह (1240-42 ई.)..... 292
❖ अलाउद्दीन मसूदशाह (1242-1246 ई.)..... 293
❖ नासिरुद्दीन महमूद (1246-1265 ई.)..... 293
❖ बलबन (1265-86 ई.)..... 293
❖ राजत्व सिद्धांत..... 294
❖ न्याय व्यवस्था..... 295
❖ सैन्य व्यवस्था 295
❖ राजव्यवस्था 295
❖ आन्तरिक विद्रोह (रक्त एवं लौह की नीति) 296

6. खिलजी वंश.....297 – 305

➲ **खिलजी क्रांति.....297**
- ❖ जलालुद्दीन खिलजी (1290-96 ई.).....297
- ❖ अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.).....298
- ❖ **दक्षिण की नीति.....298**
- ❖ वारंगल अभियान (1309 ई.).....299
- ❖ द्वारसमुद्र अभियान (1310 ई.).....300
- ❖ मदुरा या मावर अभियान (1311 ई.).....300
- ❖ देवगिरि पर तीसरा आक्रमण (1312-13 ई.).....300
- ❖ अलाउद्दीन के राजनीतिक विचार (राजत्व सिद्धान्त).300
- ❖ प्रशासनिक सुधार.....301
- ❖ पुलिस और गुप्तचर.....301
- ❖ प्रांतीय प्रशासन.....302
- ❖ सैनिक सुधार.....302
- ❖ **राजस्व सुधार.....302**
- ❖ अलाउद्दीन का बाजार विनियमन.....303
- ❖ **मण्डी.....303**
- ❖ **सराय-ए-अदल.....304**

➲ **कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी (1316-20 ई.).....305**

7. तुगलक, सैयद और लोदी वंश.....306 – 316

➲ **तुगलक वंश.....306**
- ❖ गयासुद्दीन तुगलक (1320-25 ई.).....306
- ❖ ग्यासुद्दीन तुगलक द्वारा किया गया सुधार कार्य.....306
- ❖ मुहम्मद बिन तुगलक (1325-51 ई.).....307
- ❖ मुहम्मद बिन तुगलक की योजनाएं.....307
- ❖ राजधानी परिवर्तन.....307
- ❖ सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन.....307
- ❖ खुरासान अभियान.....308
- ❖ कराचिल अभियान.....308
- ❖ दोआब में भू-राजस्व की वृद्धि.....308
- ❖ मुहम्मद बिन तुगलक के समय में विद्रोह.....308
- ❖ फिरोजशाह तुगलक (1351-1388 ई.).....309
- ❖ सैनिक अभियान.....309
- ❖ फिरोजशाह के प्रशासनिक सुधार.....309
- ❖ कृषि संबंधी सुधार.....310
- ❖ उद्यान एवं कारखाने.....310
- ❖ कल्याणकारी कार्य.....310
- ❖ आरंभिक मरम्मत कार्य.....311
- ❖ फिरोजशाह की धार्मिक नीति.....311
- ❖ फिरोजशाह के उत्तराधिकारी.....311

➲ **सुल्तान, खलीफा और अमीर.....312**

➲ **तुगलक सुल्तानों की दक्षिण नीति.....312**

➲ **तैमूर का आक्रमण.....313**

➲ **सैयद वंश (1414-21 ई.).....314**
- ❖ खिज्र खां (1414-21 ई.).....314
- ❖ मुबारकशाह (1421-34 ई.).....314
- ❖ मुहम्मद शाह (1434-43 ई.).....314
- ❖ अलाउद्दीन शाह (1443-51 ई.).....314

➲ **लोदी वंश (1451-1526 ई.).....314**
- ❖ बहलोल लोदी (1451-1489 ई.).....314
- ❖ सिकंदर लोदी (1489-1517 ई.).....315
- ❖ इब्राहिम लोदी (1517-26 ई.).....315

➲ **लोदी राजत्व.....315**

8. सल्तनतकालीन भारत की सामान्य दशा.....317 – 338

➲ **दिल्ली सल्तनत की प्रकृति.....317**

➲ **केंद्रीय प्रशासन.....318**

➲ **इक्ता व्यवस्था तथा प्रांतीय प्रशासन.....321**

➲ **सल्तनतकालीन अर्थव्यवस्था.....324**
- ❖ नगरीय अर्थव्यवस्था (13वीं, 14वीं सदी).....324
- ❖ नगरीय अर्थव्यवस्था के कारक.....325
- ❖ तकनीकी और दस्तकारी.....325

➲ **कला एवं वास्तुकला.....328**
- ❖ स्थापत्य कला.....328
- ❖ गुलाम वंश कालीन स्थापत्य.....329
- ❖ खिलजी कालीन स्थापत्य.....329
- ❖ तुगलक कालीन स्थापत्य.....330
- ❖ चित्रकला.....331
- ❖ **संगीत.....332**
- ❖ साहित्य.....332
- ❖ जियाउद्दीन बरनी (साहित्य में योगदान).....334

➲ **सल्तनतकालीन समाज.....334**

9. विजयनगर साम्राज्य.....339 – 350

➲ **संगम वंश.....339**

➲ **सालुव वंश (1485-1506).....341**

➲ **तुलुव वंश (1505-1565).....341**

➲ **अराविडू राजवंश (1570-1649).....343**

➲ **अर्थव्यवस्था.....344**

➲ **सामाजिक व्यवस्था.....346**

➲ **राजतंत्र एवं प्रशासनिक व्यवस्था.....347**
- ❖ राजस्व प्रशासन.....348
- ❖ प्रांतीय प्रशासन.....348

➲ **राक्षसी तंगड़ी का युद्ध.....350**

➲ **मंदिरों की भूमिका.....350**

10. बहमनी साम्राज्य.....351 – 355

- ❖ **अलाउद्दीन हसन बहमनशाह (1347-1358).....351**
- ❖ **मुहम्मद I (1358-75).....351**
- ❖ **अलाउद्दीन मुजाहिद (1375-78).....351**
- ❖ **मुहम्मद II (1378-1397).....351**
- ❖ **ताजुद्दीन फिरोज (1397-1422).....351**

❖ शिहाबुद्दीन अहमद I (1422-1436).....352
❖ अलाउद्दीन अहमद II (1436-58).....352
❖ हुमायूं (1458-61).....352
❖ निजामशाह (अहमद तृतीय, 1461-63).....352
❖ शम्सुद्दीन III (1463-1482).....352
❖ महमूद गवां का प्रशासकीय एवं सांस्कृतिक योगदान.....353
➲ अहमदनगर.....354
➲ बीजापुर.....354
❖ बीदर.....355
❖ गोलकुंडा.....355

11. क्षेत्रीय राज्यों का उदय.....356-372

➲ बंगाल.....356
➲ जौनपुर.....358
➲ मालवा.....359
➲ गुजरात.....361
➲ कश्मीर.....364
➲ राजपूताना.....367
❖ प्रतापगढ़ के गुहिलोत.....369
➲ अन्य राजपूत राज्य.....369
➲ सिंध और मुल्तान.....370
➲ खानदेश.....370
➲ उड़ीसा.....371
➲ सूर्यवंशी गजपति शासक.....371

12. भक्ति एवं सूफी आंदोलन..... 373 – 381

❖ भक्ति आंदोलन के उदय के कारण.....373
❖ भक्तिकाल के इतिहास लेखन की विभिन्न प्रवृत्तियां...374
➲ उत्तर भारत के एकेश्वरवादी आंदोलन 374
➲ सूफी आंदोलन.....377
➲ सूफी एवं भक्ति आंदोलन में सामाजिक सुधार.....380
❖ हिंदू और मुसलमान रहस्यवादियों के धार्मिक सिद्धांतों की समानता एवं प्रभाव.....380

13. शेरशाह के सुधार.....382 – 384

❖ प्रशासनिक सुधार.....382
❖ शेरशाह का प्रशासन.....382
❖ आर्थिक सुधार.....383
❖ जनकल्याणकारी कार्य.....383
❖ कला-संस्कृति.....384

14. मुगल साम्राज्य (1526.1707 ई.).....385-412

➲ बाबर (1526-1530 ई.).....386
➲ हुमायूं (1530-1556 ई.).....388
➲ अकबर (1556-1605 ई.).....389
❖ पश्चिम भारत पर मुगल साम्राज्य का विस्तार.....391
❖ पूर्वी भारत में मुगल साम्राज्य विस्तार.....392
❖ अकबर की पश्मिोत्तर सीमांत नीति.....396
❖ सुलहकुल नीति.....396
❖ अकबर की सांस्कृतिक नीतियां.....397
❖ स्थापत्य कला.....397
❖ चित्रकला.....397
❖ भाषा तथा साहित्य.....397
❖ अकबर.....397
❖ राजनैतिक एवं भौगोलिक एकीकरण.....398
❖ आर्थिक एवं प्रशासनिक एकता.....398
➲ जहांगीर (1605-27 ई.).....398
❖ दक्षिणी अभियान.....399
❖ जहांगीर की प्रशासनिक नीतियां.....400
❖ राजपूत नीति.....400
❖ धार्मिक नीति.....400
❖ जहांगीर के शासनकाल में नूरजहां की भूमिका.....401
➲ शाहजहां (1627-1658 ई.).....401
❖ मध्य एशियाई नीति.....403
❖ उत्तर-पश्चिम सीमा-नीति.....403
❖ राजपूत नीति.....403
❖ शाहजहां के काल में हुए विद्रोह.....403
➲ औरंगजेब (1658-1707 ई.).....405
❖ राज्य-विस्तार.....405
❖ दक्षिण-नीति.....406

15. मुगलों का राजत्व सिद्धांत.....413-437

➲ मुगल सेना व मनसबदारी प्रणाली.....413
➲ मनसबदारी एवं जागीरदारी व्यवस्था.....414
❖ मनसब एवं जागीर प्रथा की विफलता.....416
➲ मुगल प्रशासन.....417
❖ सम्राट अथवा बादशाह.....417
➲ मुगलकाल के अन्य अधिकारी.....423
❖ मुगलकालीन पदाधिकारी.....424
➲ मुगल भू-राजस्व व्यवस्था.....424
❖ मुगलकाल में प्रचलित भू-राजस्व निर्धारण प्रणालियां...426
➲ मुगलकालीन राजस्व अधिकारी.....427
➲ मुगलों की धार्मिक नीति.....427
❖ अकबर की धार्मिक नीति.....428
❖ औरंगजेब की धार्मिक नीति.....429
❖ विभिन्न धर्म के लोग जिनसे अकबर ने धार्मिक विचार विमर्श किए.....430
❖ अकबर के काल की प्रमुख सामाजिक धार्मिक घटनाएं430
➲ मुगल काल में सूफी आंदोलन.....430
❖ दाराशिकोह की रचनाएं एवं विषय.....431
❖ भारत में प्रमुख सूफी संप्रदाय.....431

➲ मुगल काल में सांस्कृतिक विकास 431
❖ वास्तुकला 432
❖ चित्रकला 433
➲ साहित्य 434
➲ संगीत 435
➲ अकबर के काल के स्थापत्य 436
➲ शाहजहां के काल के स्थापत्य 436
➲ अकबर के काल के अनुवाद कार्य 436
➲ अकबर कालीन साहित्य 436
➲ जहांगीर के काल के साहित्य 436
➲ शाहजहां के काल के साहित्य 436
➲ औरंगजेब के काल की साहित्यिक रचनाएं 437
➲ अकबर द्वारा दी गयी उपाधि 437
➲ विज्ञान एवं तकनीकी विकास 437
❖ विभिन्न यूरोपीय प्रौद्योगिकी का भारतीय द्वारा उपयोग 437

16. मुगल काल में आर्थिक और सामाजिक जीवन व उत्तर मुगल एवं प्रान्तीय राज्य ..... 438 – 457
➲ जमींदार और ग्रामीण उच्च वर्ग 439
➲ परवर्ती मुगल सम्राट 442
➲ मुगल साम्राज्य का पतन 445
➲ उत्तर मुगलकालीन साहित्य, कला तथा समाज 449
➲ साहित्य 449
➲ कला 450
➲ समाज 450
➲ मुगलकाल के प्रमुख यूरोपीय यात्री 451
➲ उत्तर मुगलकाल में क्षेत्रीय राज्यों का उदय 453
➲ बंगाल 453
➲ अवध 455
➲ हैदराबाद 456

17. शिवाजी एवं मराठा शक्ति का अभ्युदय ..... 458 – 469
❖ शिवाजी का प्रशासन 460
❖ अर्थव्यवस्था 462
➲ शिवाजी के उत्तराधिकारी 463
➲ मराठा-पेशवा 464
❖ बालाजी विश्वनाथ (1713-1720) 464
❖ बाजीराव प्रथम (1720-1740) 465
❖ बालाजी बाजीराव (1740-1761) 466
❖ माधवराव नारायण प्रथम (1761-1772) 467
❖ नारायण राव (1772-1773) 467
❖ माधवराव नारायण द्वितीय (1774-1795) 467
❖ पुरंदर की संधि (1776) 467
❖ सालबाई की संधि (1782) 467
❖ बसानि की संधि (1802) 468
❖ पेशवाओं के अंतर्गत मराठा प्रशासन 468

18. दक्षिण भारत के राजवंश ..... 470 – 484
➲ बादामी के चालुक्य वंश 470
❖ चालुक्य के ऐतिहासिक स्रोत 470
❖ राजनीतिक इतिहास 470
❖ पुलकेशिन प्रथम 470
❖ कीर्तिवर्मन प्रथम 470
❖ मंगलेश 470
❖ पुलकेशिन द्वितीय 471
❖ विक्रमादित्य प्रथम 471
❖ विनयादित्य 471
❖ विजयादित्य 472
❖ विक्रमादित्य द्वितीय 472
❖ कीर्तिवर्मन द्वितीय 472
➲ कल्याणी के चालुक्य 472
❖ इतिहास के स्रोत 472
❖ चालुक्यों के इतिहास के स्रोत 472
❖ राजनीतिक इतिहास 472
❖ सत्याश्रय (997-1008 ई.) 473
❖ विक्रमादित्य पंचम (1008-1015 ई.) 473
❖ जयसिंह द्वितीय (1015-1043 ई.) 473
❖ सोमेश्वर प्रथम (1043-1068 ई.) 473
❖ सोमेश्वर द्वितीय (1068-1076) 473
❖ विक्रमादित्य चतुर्थ (1076-1126) 474
❖ सोमेश्वर तृतीय (1126-1138 ई.) 474
❖ जगदेकमल्ल (1138-1151 ई.) 474
❖ तैल तृतीय (1151-1156 ई.) 474
➲ वेंगी के पूर्वी चालुक्य 474
❖ विष्णुवर्धन 474
❖ जयसिंह प्रथम 475
❖ जयसिंह द्वितीय 475
❖ विजयादित्य प्रथम 475
❖ विष्णुवर्धन चतुर्थ 475
❖ विजयादित्य द्वितीय 475
❖ विजयादित्य तृतीय 475
❖ भीम प्रथम 475
❖ अन्य प्रमुख शासक 475
❖ बादामी चालुक्य के प्रशासन 476
❖ सम्राट या राजा 476
❖ ग्राम प्रशासन 477
❖ कर प्रणाली 477
➲ साहित्य, धर्म एवं स्थापत्य कला 477
❖ साहित्य 477
❖ धर्म 477
❖ कला और स्थापत्य 478

➲ **कांची के पल्लव वंश** **478**
- ❖ ऐतिहासिक स्रोत 478

➲ **राजनीतिक इतिहास** **479**
- ❖ सिंहविष्णु (576-600 ई.) 479
- ❖ महेन्द्र वर्मन प्रथम (600-630ई.) 479
- ❖ नरसिंहवर्मन प्रथम (630-668ई.) 479
- ❖ महेन्द्रवर्मन द्वितीय (668-670 ई.) 480
- ❖ परमेश्वरवर्मन प्रथम (670-680ई.) 480
- ❖ नरसिंहवर्मन द्वितीय (680-720ई.) 480
- ❖ परमेश्वरवर्मन द्वितीय (720-731 ई.) 480
- ❖ नंदिवर्मन द्वितीय (731-795 ई.) 480
- ❖ दंतिवर्मन (795-845 ई.) 480
- ❖ नंदिवर्मन तृतीय (844-866 ई.) 481
- ❖ नृपतुंगवर्मन (865-879ई.) 481
- ❖ अपराजित (879-897 ई.) 481

➲ **प्रशासन** **481**

➲ **सांस्कृतिक गतिविधियां** **481**
- ❖ **धर्म** **481**
- ❖ **साहित्य** **482**

➲ **कला एवं स्थापत्य** **482**
- ❖ महेन्द्रवर्मन शैली (610-630 ई.) 482
- ❖ मामल्ल शैली (नरसिंहवर्मन) (630-668 ई.) 482
- ❖ राजसिंह शैली (674-800 ई.) 483
- ❖ नंदिवर्मन या अपराजित शैली (800-900 ई.) 483
- ❖ द. भारतीय मंदिर वास्तुकला शैली की प्रादेशिक भिन्नता 483

आधुनिक भारत

1. यूरोपवासियों का प्रवेश ..... 485 – 494

➲ **आधुनिक भारत** **485**

➲ **पुर्तगालियों का आगमन** **487**

➲ **डचों का आगमन** **490**

➲ **अंग्रेजों का आगमन** **491**
- ❖ पूर्व भारत में विस्तार 492
- ❖ प्रारम्भिक कठिनाईयां एवं निदान 492
- ❖ डेन 494

➲ **फ्रांसीसियों का आगमन** **494**

2. बिटिश विस्तार एवं नवीन राज्यों का उत्थान ..... 495 – 514

➲ **कर्नाटक युद्ध** **495**
- ❖ प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48) 495
- ❖ सेट थोमें का युद्ध 1748 ई. 496
- ❖ द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54) 496
- ❖ अम्बूर का युद्ध (1745 ई.) 497
- ❖ पांडिचेरी की संधि 498
- ❖ तृतीय कर्नाटक युद्ध 1758-63 498
- ❖ वाण्डिवास का युद्ध (22 जनवरी 1760 ई.) 498
- ❖ पेरिस की संधि (1763 ई.) 499

➲ **बंगाल विजय** **499**
- ❖ प्लासी का युद्ध (23 जून, 1757) 500
- ❖ मीर जाफर (1763 ई-1765 ई.) 501
- ❖ बक्सर का युद्ध (22 अक्टूबर 1764 ई.) 502
- ❖ नजमुदौला (1765 से 1766) 502
- ❖ इलाहाबाद की संधि (16 अगस्त 1765 ई.) 503

➲ **बंगाल की व्यवस्था** **503**
- ❖ आंग्ल-मैसूर युद्ध 504

➲ **मैसूर** **504**

➲ **टीपू की शासन प्रणाली** **505**

➲ **प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (1775-82 ई.)** **507**
- ❖ सालबाई की संधि (1782 ई.) 507

➲ **द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-06 ई.)** **508**
- ❖ बसीन की संधि (1802 ई.) 508
- ❖ देवगांव की संधि (1803 ई.) 508
- ❖ सुर्जी-अर्जनगांव की संधि (1803 ई.) 509

➲ **तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-18 ई.)** **509**
- ❖ पूना की संधि (13 जून 1817 ई.) 509

➲ **मराठों की पराजय के कारण** **510**

➲ **पंजाब** **511**
- ❖ रणजीत सिंह (1792 ई. से 1839 ई.) 511

3. भारत में बिटिश राज की आरंभिक संरचना ..... 515 – 539

➲ **द्वैध शासन योजना** **515**

➲ **रेग्युलेटिंग एक्ट-1773 ई.** **515**
- ❖ एक्ट पारित होने के कारण 515
- ❖ रेग्युलेटिंग एक्ट के प्रावधान 516
- ❖ अधिनियम के दोष 516

➲ **बंगाल न्यायपालिका** **516**
- ❖ अधिनियम 1781 ई. 516

➲ **पिट्स इण्डिया एक्ट, 1784 ई.** **517**
- ❖ पिट्स इण्डिया एक्ट के मुख्य उपबंध 517
- ❖ अधिनियम का लेखा-जोखा 517

➲ **1786 ई. का अधिनियम** **517**
- ❖ इस अधिनियम के प्रमुख उपबन्ध 517

➲ **चार्टर एक्ट, 1793 ई.** **517**

➲ **चार्टर एक्ट 1813 ई.** **518**

❖ चार्टर एक्ट 1813 ई. के मुख्य उपबन्ध 518
➲ **चार्टर एक्ट 1833 ई. 518**
❖ चार्टर एक्ट 1833 ई. के मुख्य उपबंध 518
➲ **चार्टर एक्ट-1853 ई. 519**
❖ चार्टर एक्ट-1853 ई. के मुख्य उपबंध 519
❖ चार्टर एक्ट-1853 ई. का लेखा-जोखा 519
➲ **भारत सरकार अधिनियम-1854 ई. 519**
❖ अधिनियम के मुख्य उपबंध 520
❖ अधिनियम का लेखा-जोखा 520
➲ **महारानी विक्टोरिया का घोषणा-पत्र 520**
➲ **ब्रिटिशकाल में भारत का संवैधानिक विकास 521**
➲ **प्रशासनिक संगठन 522**
❖ न्यायिक संगठन 523
➲ **सामाजिक-सांस्कृतिक नीति 524**
➲ **समितियां तथा आयोग 525**
➲ **शिक्षा 525**
❖ ब्रिटिशकालीन समितियां 526
➲ **रेलवे 529**
❖ टॉमस राबर्ट्सन आयोग 530
❖ एकवर्थ समिति (1919 ई.) 530
➲ **लोक सेवा 530**
❖ चार्ल्स ऐचींसन आयोग (1876) 530
❖ आइस्लिंगटन आयोग (1912 ई.) 530
❖ ली ऑफ फेयरहॉम समिति (1923 ई.) 530
➲ **सेना 531**
➲ **अकाल 531**
❖ सर जार्ज कैम्पबेल आयोग (1866-67) 532
❖ स्ट्रेची आयोग (1878-80 ई.) 532
❖ मैकडॉनल आयोग (1900 ई.) 532
❖ सर जॉन वुडहेड आयोग (1945 ई.) 532
➲ **छापाखाना (प्रेस) एवं इसका प्रभाव 533**
❖ प्रेस के विरुद्ध प्रतिबंध 534
➲ **प्रेस की भूमिका एवं प्रभाव 536**
❖ देसी प्रेस द्वारा राष्ट्रीय चेतना का प्रसार 536
➲ **भारतीय भाषाओं में आधुनिक साहित्य का उदय 537**

4. बिटिश राज का आर्थिक प्रभाव ..... 540 – 554

➲ **औपनिवेशिक नीति 540**
❖ उद्देश्य 541
➲ **आर्थिक प्रभाव 541**
➲ **भू राजस्व बंदोबस्ती 547**
➲ **इस्तमरारी बन्दोबस्त/स्थायी बन्दोबस्त 547**
❖ **रैयतवाड़ी बन्दोबस्त 548**
❖ दोष छोड़ा 549
❖ महालवाड़ी प्रथा 549
➲ **कृषि का वाणिज्यीकरण 549**
❖ ग्रामीणों पर प्रभाव 550
❖ भूमिहीन श्रमिकों की वृद्धि 551
➲ **ग्रामीण भारत की दुर्भिक्ष नीति 551**
➲ **रेलवे का विकास 553**

5. सांस्कृतिक समागम एवं सामाजिक परिवर्तन ..... 555 – 570

➲ **भारतीय पुनर्जागरण तथा सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन 555**
❖ भारतीय पुर्नजागरण को प्रेरित करने वाले कारक 555
➲ **समाज सुधाार से संबंधित कार्य 556**
➲ **मुस्लिम सामाजिक-धार्मिक आंदोलन 562**
➲ **निम्न जातीय आन्दोलन 563**
❖ महाराष्ट्र में निम्न जातीय आन्दोलन 564
➲ **तमिलनाडु में आन्दोलन 566**
➲ **आंध्र में आत्म-सम्मान आन्दोलन 567**
➲ **कर्नाटक में गैर-ब्राह्मण आन्दोलन 567**
➲ **केरल में आंदोलन 567**
➲ **देश के अन्य आंदोलन 568**
➲ **सामाजिक सुधार 568**
➲ **पुर्नजागरण से भारतीय मध्यम वर्गों का विकास 569**
❖ भारत के पुर्नजागरण आंदोलन से उत्पन्न राष्ट्रीय चेतना का योगदान 570

6. महत्वपूर्ण गवर्नर जनरल एवं वायसराय ..... 571 – 606

➲ **रॉबर्ट क्लाइव (1744-1767 ई.) 571**
❖ बंगाल का गर्वनर 571
➲ **वेन्सिटार्ट (1760-65 ई.) 572**
➲ **वेरेलस्ट (1767-69 ई.) 572**
➲ **कार्टियर (1769-72 ई.) 572**
➲ **वारेन हेस्टिंग्स (1772-1785 ई.) 572**
❖ रेग्यूलेटिंग एक्ट तथा पिट्स इंडिया एक्ट (1773 एवं 1784 ई.) 576
❖ लार्ड कॉर्नवालिस (1786-93 ई.) 577
❖ न्यायिक सुधार 577
➲ **सर जॉन शोर (1793-98 ई.) 579**
➲ **लॉर्ड वेलेजली (1798-1805 ई.) 579**
❖ सहायक संधि 580
❖ सहायक संधि के दुष्प्रभाव 580
❖ सहायक संधि और देशी राज्य 581
➲ **सर जार्ज बार्लो (1805-1807 ई.) 582**
➲ **लार्ड मिंटो (1807-1813 ई.) 582**
❖ लॉर्ड मिंटो का विदेशों से संबंध 583

➲ लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-1823 ई.) 583
❖ तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध 584
➲ लार्ड एडम्स (1823 ई.) 585
➲ लार्ड एम्हर्स्ट (1823-28 ई.) 585
➲ लार्ड विलियम केवेंडिश बैंटिक (1828-1835 ई.) 585
❖ भारत का गर्वनर जनरल 585
➲ सर चार्ल्स मेटकॉफ (1835-1836 ई.) 589
➲ लॉर्ड आकलैंड (1835-1842 ई.) 589
➲ लॉर्ड एलनबरो (1842-1844 ई.) 589
➲ लॉर्ड हार्डिंग प्रथम (1844-48 ई.) 589
➲ लार्ड डलहौजी (1848-56 ई.) 589
❖ साम्राज्य विस्तार 589
❖ द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध 592
❖ प्रशासनिक सुधार 592
➲ वायसराय तथा गवर्नर जनरल 594
❖ लॉर्ड कैनिंग (1858-1862 ई.) 594
❖ लॉर्ड एल्गिन प्रथम (1862-1863 ई.) 594
❖ सर जॉन लॉरेन्स (1864.69 ई.) 594
❖ लॉर्ड मेयो (1869.72 ई.) 594
❖ लॉर्ड नार्थब्रुक (1872.76 ई.) 594
❖ लार्ड लिटन (1876-80 ई.) 595
❖ लार्ड रिपन (1880-84 ई.) 597
❖ रिपन का त्यागपत्र 599
❖ लॉर्ड डफरिन (1884.88 ई.) 600
❖ लॉर्ड लेन्सडाउन (1888.94 ई.) 600
❖ लॉर्ड एल्गिन द्वितीय (1894.98 ई.) 600
❖ लार्ड कर्जन (1899-1905 ई.) 600
❖ प्रशासनिक सुधार (Administrative Reforms) 600
❖ यंग हस्बैंण्ड 603

7. बिटिश राज्य की विदेश नीति ..... 607 – 611

➲ सिंध की विजय 607
➲ आंग्ल-अफगान संबंध 608
➲ (द्वितीय आंग्ल-अफगान युद्ध) (1878-1880 ई.) 610
❖ गण्डमक की संधि (26 मई, 1879) 610
➲ नेपाल 611
➲ बर्मा 611
❖ याण्डबू की संधि (24 फरवरी, 1826 ई.) 611

8. बिटिश शासन का विरोध ..... 612 – 622

➲ नागरिक विद्रोह 612
❖ विद्रोहों का स्वरूप 612
➲ अन्य नागरिक व गैर आदिवासी विद्रोह 612
➲ आदिवासी विद्रोह 615
➲ अन्य आदिवासी विद्रोह 617
➲ विद्रोहों-आन्दोलनों से जुड़ी शब्दावली 618
➲ किसान आन्दोलन 619
❖ किसान विद्रोह के कारण 619
➲ अन्य किसान आंदोलन 621
❖ आंदोलनों का महत्व 622

9. 1857 का विद्रोह ..... 623 – 629

❖ तात्कालिक कारण 624
❖ विद्रोह का प्रारम्भ 624
❖ विद्रोह का प्रसार 624
➲ विद्रोह की असफलता के कारण 626
❖ 1857 के विद्रोह का परिणाम/प्रभाव 626
➲ विद्रोह का चरित्र या स्वरूप 627

10. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम : प्रथम चरण ..... 630 – 653

➲ अंग्रेजी राज्य का प्रभाव 630
1. आर्थिक प्रभाव (Economic impact) ----------630
2. राजनीतिक प्रभाव (Political Impact) ----------631
3. सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रभाव (Social and Cultural Impact)----------632
➲ राष्ट्रीय चेतना का विकास 633
1. विदेशी प्रभुत्व का परिणाम 633
2. भारत में प्रशासनिक और आर्थिक एकता की स्थापना .. 634
3. पश्चिमी विचार तथा आधुनिक शिक्षा का प्रचलन 635
4. आधुनिक समाचार पत्रों का उभरना 635
5. इतिहास के शोध का प्रभाव 636
6. शासकों का जातीय दंभ 636
7. समकालीन यूरोपीय आन्दोलनों का प्रभाव 636
8. समाज तथा धार्मिक सुधार आंदोलनों का प्रगतिशील रूप 636
9. लार्ड लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियां 636
10. इलबर्ट बिल का विवाद 637
➲ विभिन्न संगठनों का निर्माण 637
❖ बंगाल प्रेसिडेंसी में राजनीतिक संगठन 637
❖ बम्बई प्रेसिडेन्सी में राजनीतिक संस्थाएं 637
❖ मद्रास प्रेसिडेंसी में राजनीतिक संस्थाएं 638
➲ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना तथा इसका नरमपंथी चरण 638
❖ प्रथम चरण (1885-1905 ई.) 638
❖ सेफ्टीवाल्व की अवधारणा 639
❖ कांग्रेस का नरमपंथी चरण 640
➲ कार्यक्रम और कार्यकलाप 641
1. साम्राज्यवाद की अर्थशास्त्रीय आलोचना 641
2. संवैधानिक सुधारों की मांग 641
3. प्रशासकीय सुधारों की मांग 642
❖ जनता की भूमिका 643
❖ आलोचनात्मक मूल्यांकन 643
➲ आर्थिक राष्ट्रीयता 644

➲ **उदारवादी नेताओं का योगदान 645**
1. दादा भाई नौरोजी **(Grand Oldman of India) 645**
2. फिरोजशाह मेहता (1845-1915) 645
3. गोपाल कृष्ण गोखले (1866-1915)..... 645
4. सुरेन्द्र नाथ बनर्जी (1848-1925)..... 645
5. ए.ओ. हयूम (1829-1912) 645

➲ **स्वदेशी आंदोलन तथा उग्रवाद में वृद्धि 646**
❖ बंग-भंग आन्दोलन 646
❖ बंगाल विभाजन का परिणाम..... 647

➲ **द्वितीय चरण (1905-1919 ई.) उग्रवादी राष्ट्रीयता का युग..... 648**
❖ ब्रिटिश शासन के सही चरित्र की पहचान..... 648
❖ आत्म विश्वास का संदेश..... 648
❖ शिक्षा और बेरोजगारी में वृद्धि..... 649
❖ कांग्रेस की उपलब्धियों से असंतोष..... 649
❖ कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियां..... 649
❖ समकालीन अर्न्तराष्ट्रीय प्रभाव..... 649
❖ उग्र विचारों से प्रेरित नेताओं का प्रादुर्भाव 649
❖ उग्रवादी दल के उद्देश्य तथा कार्यक्रम 650
❖ कांग्रेस का विभाजन (1907 ई.) 650
❖ उग्रवाद का मूल्यांकन 651

➲ **उग्रवादी नेताओं का योगदान 651**
1. बाल गंगाधर तिलक (1856-1920)..... 651
2. लाला लाजपत राय (1865- 1928) 652
3. विपिनचन्द्र पाल (1858-1932)..... 653
4. अरविंद घोष (1872-1950)..... 653

11. भारत में प्रतिनिधि सरकार.....654 – 666

➲ **1861 का भारतीय परिषद अधिनियम (The Indian Council Act-1861)----------654**
❖ अधिनियम के उपबंध..... 654
❖ अधिनियम के दोष 655

➲ **भारतीय परिषद अधिनियम, 1892**
(INDIAN COUNCIL ACT, 1892) ----------655
❖ अधिनियम के मुख्य उपबंध..... 655
❖ अधिनियम के आलोचनाएं 656

➲ **भारतीय परिषद एक्ट 1909 (मार्ले मिंटो सुधार).. 656**
❖ अधिनियम के मुख्य उपबंध..... 657
❖ अधिनियम के दोष 658

➲ **भारतीय शासन अधिनियम (1919 ई.)..... 659**
❖ अधिनियम के पारित होने की परिस्थितियां..... 659

➲ **माण्टेग्यू की घोषणा (20 अगस्त, 1917)..... 660**
❖ माण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड रिपोर्ट..... 661

➲ **भारत शासन अधिनियम 1919 ..... 661**
❖ अधिनियम की मुख्य विशेषताएं 661
❖ भारत शासन अधिनियम 1919 की आलोचना..... 663
❖ अधिनियम 1919 की समीक्षा..... 663

➲ **भारत सरकार अधिनियम, (1935 ई.)----------663**
➲ **अधिनियम के पारित होने की परिस्थितियां..... 664**
➲ **अधिनियम के मुख्य उपबंध..... 664**
❖ भारत शासन 1935 अधिनियम का क्रियान्वयन..... 665
❖ अधिनियम का मूल्यांकन..... 666

12. प्रथम विश्व युद्ध से गोलमेज सम्मेलन तक..... 667 – 687

1. होमरूल आन्दोलन का उदय..... 667
2. कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के बीच 1916 का समझौता. 668
3. क्रान्तिकारी आन्दोलन का पुनरुत्थान..... 668
4. खिलाफत आन्दोलन का जन्म..... 668
5. राष्ट्रवाद का प्रसार..... 668
❖ माण्टेग्यू घोषणापत्र की पृष्ठभूमि..... 668

➲ **गांधीवादी युग..... 670**
❖ महात्मा गांधी का जीवन परिचय (1869-1948 ई.).. 670
❖ गांधी के जनांदोलनों का सैद्धांतिक आधार 671
❖ कार्यपद्धति (रणनीति) 671
❖ रचनात्मक कार्य..... 672

➲ **खिलाफत आन्दोलन..... 672**
❖ खिलाफत एवं असहयोग आंदोलन के बीच संबंध..... 673
❖ आन्दोलन के परोक्ष परिणाम..... 673

➲ **असहयोग आन्दोलन 1920-22..... 674**
❖ आन्दोलन की प्रगति..... 675
❖ असहयोग आन्दोलन का स्थगन..... 676
❖ असहयोग के अप्रत्यक्ष प्रभाव..... 676

➲ **स्वराज दल (मार्च 1923 ई)..... 676**
❖ स्वराज दल के उद्देश्य..... 677
❖ स्वराज दल की नीति में परिवर्तन..... 677
❖ स्वराज दल का पतन..... 678

➲ **साइमन कमीशन..... 678**
❖ साइमन कमीशन के उद्देश्य..... 678

➲ **नेहरू रिपोर्ट (1928 ई.)..... 680**
❖ नेहरू रिपोर्ट के प्रमुख सुझाव..... 680

➲ **जिन्ना के 14 सूत्री कार्यक्रम (मार्च 1929)..... 681**
➲ **सविनय अवज्ञा आन्दोलन..... 681**
❖ आन्दोलन की प्रगति..... 682

➲ **गोलमेज सम्मेलन..... 683**
❖ प्रथम गोलमेज सम्मेलन (12 नवम्बर, 1930-19 जनवरी, 1931)..... 683
❖ द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (7 सितम्बर, 1931 से 1 दिसम्बर, 1931) ई..... 684

➲ **मैकडोनाल्ड अवार्ड तथा पूना पैक्ट..... 685**
❖ सांप्रदायिक पंचाट (16 अगस्त, 1932) ई..... 685
❖ पूना पैक्ट (24 सितंबर, 1932) ई..... 686
❖ तीसरा गोलमेज सम्मेलन (17 नवम्बर, 1932 से 24 दिसम्बर, 1932) ई..... 686

➲ **श्वेत-पत्र** (The white paper–March 1933) ----686
❖ आन्दोलन का अंत 686
❖ प्रांतीय चुनाव (1937 ई.) 686

13. राष्ट्रीय आंदोलन में अन्य विचारधाराएं..... 688 – 697

➲ **क्रांतिकारी आन्दोलन 688**
❖ महाराष्ट्र में क्रान्तिकारी अभियान 688
❖ बंगाल में क्रांतिकारी आन्दोलन 688
❖ हावडा षडयंत्र केस (1910) 689
❖ पंजाब तथा दिल्ली में क्रांतिकारी कार्रवाइयां 689
❖ राजस्थान में क्रांतिकारी आंदोलन 689
❖ भारत तथा विदेशों में गुप्त समितियों का गठन 689
➲ **विदेशों में क्रांतिकारी संगठन एवं कार्य 690**
❖ पत्र पत्रिकाएं 690
❖ क्रांतिकारियों पर हुए मुकदमे 690
❖ अफगानिस्तान 691
➲ **क्रांतिकारी आंदोलन का दूसरा चरण 691**
❖ अन्य क्रांतिकारी कार्यवाहीयां 691
❖ क्रान्तिकारी आन्दोलन की असफलता के कारण 692
➲ **वामपंथी आन्दोलन 692**
❖ भारत में वामपंथी आंदोलन के उदय के कारक 693
➲ **साम्यवादी दल** (The Communist Party) -------693
❖ प्रथम चरण 694
❖ दूसरा चरण 694
❖ तीसरा चरण 694
❖ चौथा चरण 694
❖ पांचवा चरण 695
➲ **कांग्रेस समाजवादी दल 695**
➲ **ट्रेड यूनियन आन्दोलन 696**
❖ श्रमिक संघों का उदय 696

14. द्वितीय विश्व युद्ध से स्वतंत्रता प्राप्ति तक ..... 698 – 711

➲ **अगस्त प्रस्ताव (The August offer 8 August, 1940) -----698**
❖ व्यक्तिगत अवज्ञा और बारदोली अधिवेशन (17 अक्टूबर, 1940 ई.) 699
❖ 1942 का क्रिप्स शिष्टमंडल 699
➲ **भारत छोड़ो आन्दोलन (1942 ई.) 699**
❖ अगस्त क्रान्ति 699
❖ आंदोलन की प्रगति 700
❖ निष्कर्ष 700
➲ **आजाद हिंद फौज आन्दोलन 700**
❖ आजाद हिंद फौज पर मुकदमा (नवंबर 1945) 701
➲ **राजगोपालाचारी योजना और जिन्ना 702**
❖ सी.आर. फार्मूला (10 जुलाई, 1944) 702
➲ **वैवेल योजना और शिमला सम्मेलन 702**
❖ वेवेल योजना (19 जून 1945 ई.) 702
❖ शिमला सम्मेलन (25 जून, 1945 ई.) 703
➲ **शाही नौसेना का सशस्त्र विद्रोह (8 फरवरी से 23 फरवरी 1946 ई.) 703**
❖ नौसेना विद्रोह का महत्व 704
➲ **इग्लैंड एवं भारत में चुनाव 704**
❖ कैबिनेट मिशन योजना (24 मार्च, 1946) 704
❖ कैबिनेट मिशन की सिफारिशें 705
❖ संविधान सभा का चुनाव (जुलाई 1946 ई.) 705
❖ सीधी कार्यवाही दिवश (16 अगस्त, 1946 ई.) 705
❖ माउंटबेटन योजना (3 जून, 1947 ई.) 706
❖ भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 706
❖ देशी रियासतों का एकीकरण 706
➲ **स्वतंत्रता प्राप्ति में सहायक तत्व 707**
➲ **राष्ट्रीय आन्दोलन के वैचारिक आयाम 708**
➲ **गांधीवादी युग के प्रमुख नेताओं का योगदान 710**
❖ सुभाष चन्द्र बोस (1897-1945) 710
❖ अबुल कलाम आजाद (1888-1958) 710

15. भारतीय राष्ट्रीय राजनीति में अलगाववादी प्रवृत्तियां.. 712 – 716

➲ **सांप्रदायिकता का उदय और विकास 712**
➲ **सर सैयद अहमद खान 713**
❖ सैयद अहमद के बाद 714
➲ **सांप्रदायिकता का उदय 714**
❖ मुस्लिम लीग और मुस्लिम सांप्रदायिकता का उदय 714
❖ हिन्दू महासभा तथा हिन्दू सांप्रदायिकता का उदय 715
❖ उग्रवादी सांप्रदायिकता का दौर 715
➲ **विभाजन का उत्तरदायित्व 716**

16. भारत की स्वतंत्रता से 1964 ई. तक.....717 – 729

➲ **संसदीय, पंथनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य (1950 ई. का संविधान) 717**
❖ संविधान के स्रोत 717
❖ संविधान का निर्माण 718
❖ स्वाधीन भारत का पहला मंत्रिमंडल 719
❖ संविधान की रचना 719
➲ **जवाहरलाल नेहरू का विकासवादी, समाजवादी दर्शन... ..... 720**
❖ योजना व्यवस्था 721
❖ मिश्रित अर्थव्यवस्था 721
➲ **राज्य नियंत्रित औद्योगीकरण 721**
❖ सरकार की 1948 ई. की औद्योगिक नीति 721
❖ 1956 ई. की औद्योगिक नीति 722
❖ औद्योगिक प्रणालियों की समिक्षा के लिए एस. दत्त समिति 722
➲ **कृषि सुधार** (Agrarian Reforms) ----------723

❖ तकनीकी व्यवस्था में सुधार 723
❖ संरचनात्मक सुधार 723
❖ संस्थागत व्यवस्था में सुधार अथवा भू-सुधार 724

➲ **भारत में भूमि सुधार कार्यक्रम 724**
❖ भूमि सुधार कार्यक्रम की वर्तमान स्थिति 725

➲ **गुटनिरपेक्षता 726**
❖ गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रकृति 727
❖ गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का उदय 727

➲ **भारत की विदेश नीति 728**
❖ गुट निरपेक्षता के सिद्धांत पर आधारित विदेश नीति .. 728

17. भारतीय रियासतें ..... 730 – 735

➲ **कंपनी और भारतीय रियासतें 730**

➲ **देशी रियासतों में स्वतंत्रता के संघर्ष 732**
❖ विभिन्न राज्यों में आन्दोलन 733
❖ रियासतों का एकीकरण एवं विलय 734
❖ भारतीय रियासतों के एकीकरण का प्रथम चरण 734
❖ रियासतों के विलय के प्रावधान 734
❖ भारतीय रियासतों के एकीकरण का द्वितीय चरण 735

18. 1947 से 2009 तक का इतिहास ..... 736 – 746

➲ **राज्यों का भाषावाद पुनर्गठन 736**
❖ राज्य पुर्नगठन एक्ट 1956 737

➲ **क्षेत्रीयतावाद एवं क्षेत्रीय असमानता 738**
❖ भारत में क्षेत्रीय चेतना का विकास 738
❖ क्षेत्रीयता के कारण 738
❖ भारत में क्षेत्रीय असमानता 739
❖ क्षेत्रीय असमानता को दूर करने हेतु सुझाव 740

➲ **राष्ट्रीय भाषा 740**
❖ संविधान में हिन्दी 741
❖ हिन्दी और अंग्रेजी भाषा विवाद 742

➲ **1947 के बाद नृजातित्व 742**
❖ नृजातित्व एवं सामाजिक परिवर्तन 742

➲ **पिछड़ी जातियां 743**
❖ मंडल आयोग एवं पिछड़ी जातियों की राजनीति 743

➲ **जनजातियां 743**
❖ स्वतंत्रता के बाद अनुसूचित जनजाति 743

➲ **दलित आंदोलन 744**
❖ अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम अधिनियमित (2008) 745

➲ **1947 के बाद जाति 746**
❖ 1947 के बाद जाति व्यवस्था एवं उसका रूपांतरण 746
❖ जाति व्यवस्था के आर्थिक पक्षों में परिवर्तन 746

ऐतिहासिक मानचित्रावली

➲ **मानचित्र 749**
❖ नवपाषाण काल के महत्वपूर्ण स्थल 749
❖ भारत में प्रस्तर युग के महत्वपूर्ण स्थल 750
❖ हड़प्पा सभ्यता का विस्तार क्षेत्र और इसके महत्वपूर्ण पुरास्थल 751
❖ हड़प्पा सभ्यता का विस्तार 752
❖ ताम्रपाषाण संस्कृति तथा ताम्र संचयों के महत्वपूर्ण स्थल 753
❖ भारत में चित्रित-धूसर-मृदभांड-संस्कृति का वितरण 754
❖ भारत उत्तरी काली पालिश वाले मृदभांड स्थल 755
❖ महाजनपद 756
❖ मौर्य साम्राज्य 757
❖ लगभग 150 ई. का भारत शक-कुषाण, सातवाहन 758
❖ गुप्त साम्राज्य 759
❖ गुप्त साम्राज्य चौथी शताब्दी के अंत में 760
❖ 640 ई. में भारत हर्ष का साम्राज्य 761
❖ ह्वेनत्सांग का यात्रा मार्ग 762
❖ 1857 विद्रोह के प्रमुख स्थल 763

➲ **मानचित्र आधारित स्थल/केंद्र 764**
1. पुरापाषाणकालीन स्थल 764
2. नवपाषाणकालीन स्थल 764
3. ताम्रपाषाणिक स्थल 766
4. हड़प्पाकालीन स्थल 767
5. प्राचीन प्रशासनिक केंद्र 769
6. प्राचीन सांस्कृतिक केन्द्र 773
7. प्राचीन मंदिर स्थल 774
8. प्राचीन राजधानी नगर 776
9. प्राचीन बौद्ध स्थल 778
10. प्राचीन जैन स्थल 780
11. प्राचीन बंदरगाह 781
12. प्राचीन शिक्षा केंद्र 783

❖❖♦❖❖

प्राचीन भारत

अध्याय 1

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

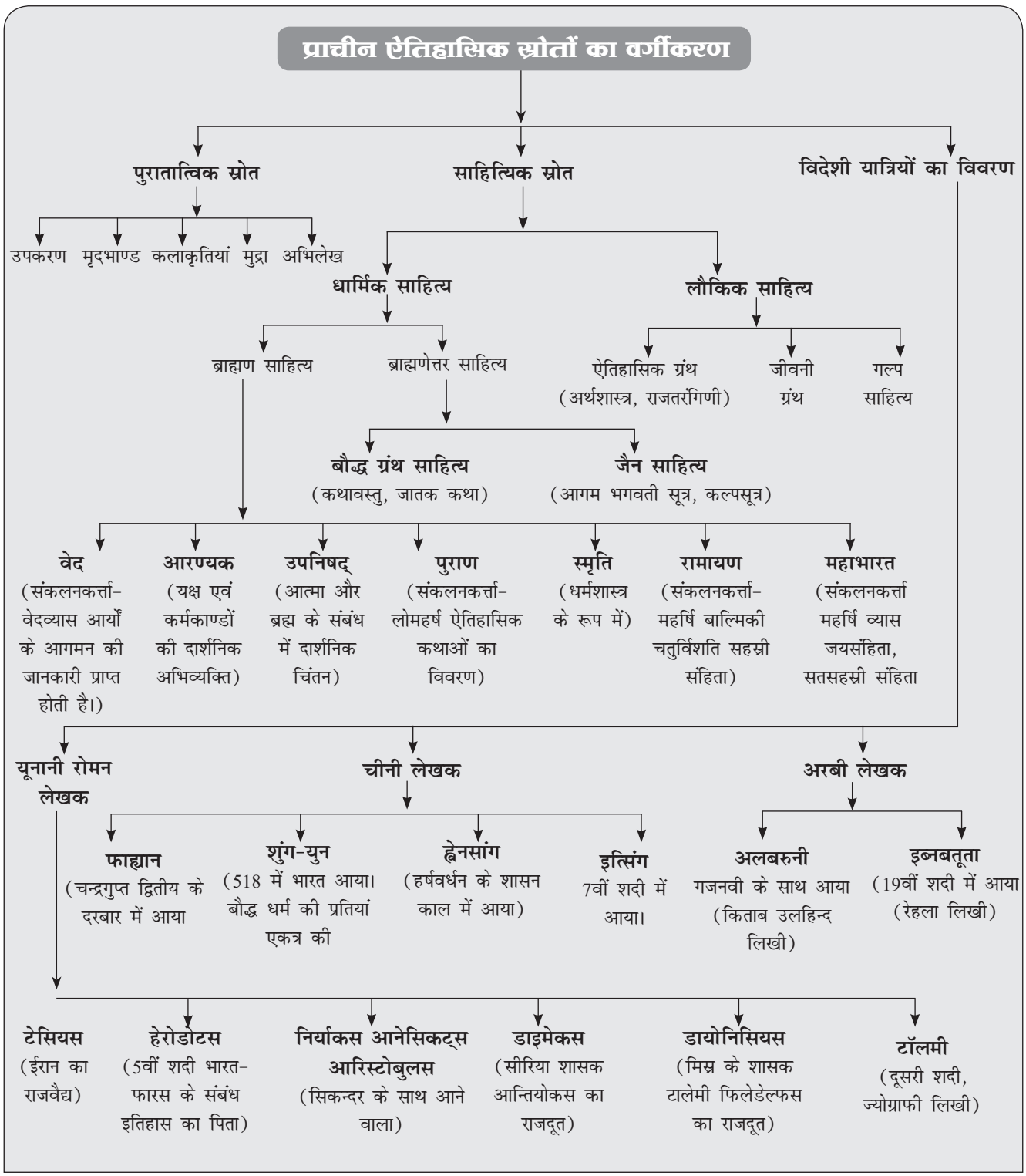

प्राचीन भारतीय इतिहास अत्यन्त गौरवशाली रहा है। पाश्चात्य विदेशी विद्वानों का मत था कि भारतीयों को इतिहास लेखन की समझ नहीं थी और इतिहास के नाम पर जो लिखा गया कहानी एवं धर्मग्रन्थ से अधिक कुछ नहीं है। भारतीय इतिहासकारों ने पाश्चात्य इतिहासकारों की इस संकल्पना को सतही ज्ञान कहा है। **प्राचीन भारत में इतिहास के ज्ञान को बहुत उच्च स्थान दिया जाता था,** उसे वेद के समान पवित्र माना जाता था। **अर्थवेद, ब्राह्मणों और उपनिषदों** में इतिहास ज्ञान को पुराण की एक शाखा के रूप में शामिल किया गया है। पुराणों के अनुसार इतिहास के विषय हैं- **सर्ग** (सृष्टि की उत्पत्ति), **प्रतिसर्ग** (सृष्टि का प्रत्यावर्तन एवं प्रति विकास) मनवन्तर (समय की आवृत्ति), वंश (राजाओं और ऋषियों की वंशावली) और **वंशानुचरित** (कुछ चुने हुए पात्रों की जवनियां)।

आधुनिक इतिहासकार ऐतिहासिक घटनाओं में **कार्य-कारण** संबंध स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु प्राचीन इतिहासकार केवल उन घटनाओं का वर्णन करते थे जिनसे जनसाधारण को कुछ शिक्षा मिल सके जैसे- इतिहास का प्रायोजन यह समझाना और बताना था कि **व्यक्तियों का परिवार के प्रति, परिवार का अपने वंश के प्रति, वंशों का गांवों के प्रति, गांवों का जनपद व राष्ट्र के प्रति और अन्ततः समूची मानवता के प्रति क्या कर्तव्य है** और उनमें त्याग एवं बलिदान की भावना कैसे उत्पन्न की जाये।

महाभारत में प्रस्तुत इतिहास की परिभाषा भारतीयों की इतिहास विषयक संकल्पना पर पर्याप्त प्रकाश डालती है, जिसमें उद्धृत करते हुए लिखा गया है कि ऐसी प्राचीन रुचिकर कथा, जिससे **धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष** की शिक्षा मिल सके, 'इतिहास' कहलाती है।

इन पुरुषार्थों को करने की प्रेरणा देने में इतिहास भी एक साधन था, इसलिए प्राचीन भारतीय इतिहासकार उन घटनाओं को कोई महत्व नहीं देते थे, जिसे इन चारों पुरुषार्थों की शिक्षा न मिल सके।

इसलिए प्राचीन भारत का इतिहास राजनीतिक कम, सांस्कृतिक अधिक है। भिन्न दृष्टिकोण से रचित होने के कारण अधिकांश भारतीय ग्रंथ आधुनिक परिभाषा के अंतर्गत इतिहास ग्रंथ नहीं हैं, तथापि उनमें बहुमूल्य ऐतिहासिक सामग्री अंर्तनिहित है।

प्राचीन इतिहास के प्रमुख स्रोत्र

भारत के इतिहास निर्माण के लिए उपलब्ध स्रोतों के आधार पर अधोलिखित तीन शीर्षकों में रख सकते हैं-
(1) पुरातात्विक स्त्रोत (2) साहित्यिक स्रोत (3) विदेशी यात्रियों के वृत्तांत

पुरातात्विक स्रोत

प्राचीन भारत के अध्ययन में पुरातात्विक सामग्री का विशिष्ट महत्त्व है। इससे भारतवर्ष के अनेक तथाकथित अन्ध युगों (Dark Ages) पर प्रकाश पड़ा है तथा अनेकानेक संदिग्ध ऐतिहासिक मतों का खण्डन हुआ है। भारतीय इतिहास में लिखित अभिलेखों की प्रध ानता है। हालांकि मंदिर के अवशेष, सिक्के, घर के अवशेष, खंभों के गड्डे (*Post Holes*), मिट्टी के बर्तन, कोष्ठागार आदि के रूप में पुरावशेष भी साक्ष्य की एक महत्वपूर्ण श्रेणी का गठन करते हैं।

पुरातत्व का महत्व इसी बात से समझा जा सकता है कि यह आज एकमात्र इतिहास ही नहीं, वरन एक स्वतंत्र 'पुरातत्त्व विज्ञान' के रूप में विकसित हो गया है। पुरातात्विक सामग्री में किसी भी प्रकार की हेर-फेर करने की संभावना बहुत कम रहती है, इसलिए यह इतिहास की वास्तविक रूप-रेखा निर्माण में बहुत सहायक होती है। साहित्यिक साक्ष्य जहां मौन हैं, वहां पुरातात्विक स्रोत पर्याप्त मात्रा में साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।

पुरातात्विक स्त्रोतों को तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं-
1. अभिलेख, 2. स्मारक और भवन 3. मुद्राएं।

1. अभिलेख

पुरातात्विक स्रोतों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभिलेख हैं। ये अभिलेख पाषाण शिलाओं, स्तंभों, ताम्रपत्रों, दीवारों, मुद्राओं, एवं प्रतिमाओं आदि पर खुदे हुए मिले हैं। सबसे प्राचीन अभिलेखों में मध्य एशिया के **बोगजकोई** से प्राप्त अभिलेख हैं।

शिलालेख इतिहास लिखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण और विश्वसनीय स्त्रोत है। समकालीन दस्तावेज होने के कारण शिलालेख बाद के **प्रक्षेपों** से मुक्त होते हैं। ये उसी रूप में दिखाई देते हैं, जिसमें ये पहली बार उत्कीर्ण किए गए थे।

भारत में प्राप्त सबसे प्राचीन अभिलेख **हड़प्पा संस्कृति** की मुहरों पर अंकित हैं। ये लगभग **2500 ई. पू.** के हैं। परन्तु **इनका पढ़ना अभी तक संभव नहीं हुआ** है। सर्वप्रथम अशोक के शिलालेख पढे गए। ये शिलालेख पूरे उपमहाद्वीप में चट्टानों की सतह और पत्थर के स्तंभों पर पाए गए हैं। ये चार लिपियों में लिखे हुए हैं। अशोक के तत्कालिक साम्राज्य, जो वर्तमान अफगानिस्तान में था, वहां अरामाइक और ग्रीक लिपियों का प्रयोग किया गया था, जबकि गंधार क्षेत्र में खरोष्ठी लिपि प्रयोग में लाई जाती थी।

खरोष्ठी लिपि भारतीय भाषाओं की वर्णमाला प्रणाली पर विकसित हुई और दाएं से बाएं लिखी जाती थी। 'ब्राह्मी लिपि' को सबसे पहले **1837 ई.** में ईस्ट इंडिया कंपनी के लोक सेवा अधिकारी **जेम्स प्रिंसेप ने** पढ़ा था। केवल उत्तर-पश्चिमी भारत में मिले कुछ अभिलेख खरोष्ठी लिपि में हैं। **पाकिस्तान और अफगानिस्तान** के अशोक के शिलालेखों में यूनानी और आरमेइक लिपियों का प्रयोग हुआ है।

सम्राट अशोक का नाम मास्की (निजाम का राज्य) **निट्टूर और गुर्ज्जरा** (मध्य प्रदेश) से प्राप्त अभिलेखों में स्पष्ट रूप से मिलता है। अशोक के अन्य अभिलेखों से उसके धर्म और **राजत्व के आदर्श** पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। ऐसे लेखों में **खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख,** शक **क्षत्रप रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख,** सातवाहन नरेश पुलुमावी का नासिक गुहालेख, गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तंभ लेख, मालव नरेश यशोबर्मन का मन्दसौर अभिलेख, चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल का अभिलेख, बंगाल के शासक विजय सेन का देवपाड़ा अभिलेख आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सरकारी और निजी अभिलेखों से प्राचीन भारत की भूव्यवस्था और प्रशासन की जानकारी प्राप्त होती है।

सरकारी अभिलेख या तो राजकवियों द्वारा रचित प्रशस्तियां हैं या भूमि अनुदान पत्र होते थे। इन अभिलेखों से शासकों की नीतियाँ, विजय तथा उपलब्धियों की सूचना प्राप्त होती है।

अध्याय 2

भारत में प्रागैतिहासिक संस्कृतियां

परिचय

मानव सभ्यता का बीजारोपण सर्वप्रथम पाषाण काल से प्रारंभ होता है। इस काल की उपलब्ध सामग्रियां मुख्यत: पाषाण निर्मित हैं। इस तथ्य को सूचित करने के लिए इस काल को 'पाषाण काल' की संज्ञा दी गई है।

पाषाणकालीन मनुष्य के क्रमिक विकास को परिलक्षित करने के लिए **थॉमसन** ने पाषाण युग को पुरातन पाषाण युग और नवीन पाषाण युग में विभाजित किया, जिसे 1863 ई. में लुब्बॉक (Lubbock) महोदय ने पुरातन-पाषाण युग को **पुरापाषाण युग** (Palaeolithic Age) और **नवीनपाषाण युग** (Neolithic Age) का नाम दिया। **बौद्धिक विकास, सांस्कृतिक प्रगति** एवं जीवनोपयोगी अनुसंधानों के दृष्टिकोण से उत्तर पाषाण, पूर्वपाषाण काल की अपेक्षा कहीं अधिक उन्नत था।

इतिहासकारों ने इन दोनों के बीच के काल को मध्यपाषाणकाल (Mesolithic Age) नाम दिया है। विद्वानों का मत है कि मध्य पाषाण काल पुरापाषाणकाल और उत्तरपाषाण काल के बीच में एक कड़ी है, जो पाषाणकालीन सभ्यता के क्रमिक, सुसम्बद्ध और अविछिन्न विकास की सूचना देता है। अत: तीनों कालों का अलग-अलग अध्ययन अनिवार्य है।

पुरा पाषाण काल (Palaeolithic Age)

पाषाण काल की प्रारंभिक अवस्था को पुरापाषाण काल कहते हैं। मानव जीवन का यह काल पाषाणकाल का सबसे लंबा काल था। भारत के विभिन्न भागों में यह काल लगभग 2.5 लाख वर्ष से कुछ पहले आरम्भ हुई तथा लगभग 10 हजार वर्ष पहले तक बनी रही।

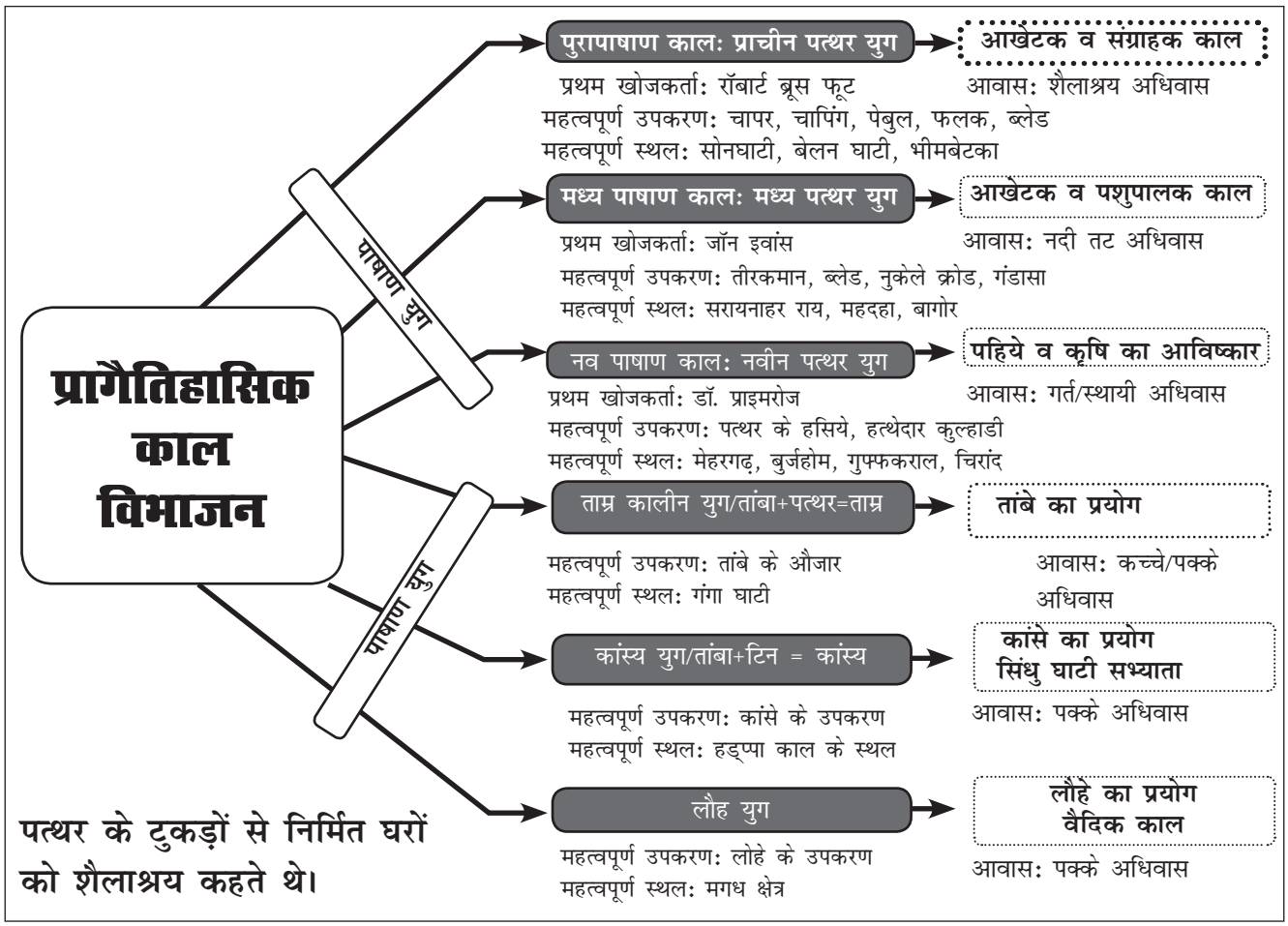

अध्याय 4

सिंधु क्षेत्रों के बाहर की संस्कृतियां

दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व तक सिंधु क्षेत्रों के बाहर भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियां उद्भूत हुईं, जो **न तो शहरी थीं** और न ही **हड़प्पा संस्कृति** की तरह थीं, बल्कि **पत्थर एवं तांबे** के **औजारों का इस्तेमाल** इन संस्कृतियों की अपनी विशिष्टता थी। अत: यह संस्कृतियाँ ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों के नाम से जानी जाती हैं।

ताम्र पाषाणिक संस्कृति का वर्गीकरण

ताम्र पाषाण संस्कृतियां अपनी भौगोलिक स्थितियों के आधार पर पहचानी जाती हैं। इस प्रकार हम इन्हें निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत करते हैं।

1. राजस्थान में **बनास संस्कृति**
2. **कायथा संस्कृति**
3. **मालवा संस्कृति**
4. महाराष्ट्र की **जोर्वे संस्कृति**

इन संस्कृतियों से संबंधित स्थलों की खुदाई से निम्न पक्षों के बारे में विस्तृत अनुमान लगाया जा सकता है:

- बस्तियों का फैलाव
- अर्थव्यवस्था का ढांचा
- शव गृह और शवदाह के तरीके
- धार्मिक विश्वास

ताम्रपाषाणिक खुदाई स्थलों में इस संस्कृति से संबंधित वस्तुओं के साथ-साथ उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, पश्चिमी बंगाल, उडीसा एवं कर्नाटक के विभिन्न भागों में ताम्र/कांस्य की वस्तुओं के भंडार प्राप्त हुए हैं। साईपाई (इटावा जिला) उत्तर प्रदेश में ताम्र मत्स्यभाला तथा उसके साथ गेरुए चित्रित बर्तन प्राप्त हुए है। यहां पर गेरूए चित्रित बर्तन, काले एवं **लाल मृद्भांड**, चित्रित **धूसर मृदभांड** आदि संस्कृतियों का **वर्णन आवश्यक** है। यह संस्कृतियां बर्तनों की विशिष्ट किस्मों के आधार पर निर्धारित की जाती हैं।

गंगा-यमुना दोआब में सौ से अधिक स्थानों पर विशिष्ट प्रकार के बर्तन प्राप्त हुए हैं, जिन्हें **गेरूए चित्रित बर्तनों** (OCP) की **संस्कृति से संबद्ध** माना जाता है। गौरिक भांड एक लाल **अनुलेपित मृद्भांड** है, जिसमें बहुत से मूठदार कलश दिखाई देते हैं।

गेरूए चित्रित बर्तनों की संस्कृति के बाद काले एवं लाल मृद्भांडों की संस्कृतियां तथा चित्रित धूसर मृद्भाडों की संस्कृतियां क्रमश: आती हैं। उत्तर भारत में हरियाणा तथा ऊपरी गंगा घाटी में चित्रित धूसर मृद्भांड के स्थलों की बड़ी संख्या मिलती है। लोहे का प्रार्दुभाव सर्वप्रथम चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति मे होता है, जो कि उत्तरी काले पॉलिश किए मृद्भाडों की संस्कृति के नाम से जानी जाती है।

1. गेरुए चित्रित बर्तनों की संस्कृति

यह संस्कृति मुख्यत: **पश्चिमी उत्तर प्रदेश** के नदियों के तटों पर विस्तृत थी। **मायापुर (सहारनपुर)** से लेकर साई **पई (इटावा)** तक लगभग 110 स्थल इस विशिष्ट संस्कृति के प्राप्त हुए हैं। इसके क्षेत्र आकार में छोटे हैं तथा कई क्षेत्रों (बिसौली, साईपई) में टीलों की ऊंचाई काफी कम है।

इन बस्तियों के बीच की दूरी 5 से 8 कि.मी. के बीच पायी गयी है। **अतरंजीखेड़ा** से प्राप्त पुरातात्विक वानस्पतिक अवशेषों से पता चलता है कि इन क्षेत्रों में धान, जौ, दालें आदि की फसल उगाई जाती थीं। यह संस्कृति 2000 ई. पूर्व से 1500 ईसा पूर्व के बीच की मानी गयी है।

दोआब के ऊपरी भाग में भी गेरुए चित्रित बर्तनों की संस्कृति के साक्ष्य मिले हैं। इस क्षेत्र में गेरूए चित्रित बर्तनों वाले लोगों के उदय के साथ ही बस्ती प्रारंभ होती है। **जोधपुर एवं नोह** (राजस्थान) में गेरुए चित्रित बर्तनों के सबसे अधिक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

2. काले एवं लाल मृद्भांड संस्कृति

काले एवं लाल मृद्भांड पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार तथा पश्चिमी बंगाल में खुदाई से प्राप्त हुए हैं। 1960 के दशक में अतरंजीखेड़ा में खुदाई के दौरान एक विशिष्ट प्रकार के मृद्भांड प्रकाश में आए, जो गेरुए चित्रित बर्तनों एवं **चित्रित धूसर मृद्भांडों** के स्तरों के बीच के थे। इस स्तर के बर्तनों को काले एवं लाल मृद्भांड कहा गया। हालांकि **जोधपुर एवं नोह** से इसी प्रकार स्तरीय क्रम प्रकाश में आये हैं किंतु अहिच्छत्र, हस्तिनापुर एवं आलमगीरपुर में काले एवं लाल मृद्भांड चित्रित धूसर मृद्भांड़ों के साथ ही प्राप्त हुए हैं।

अतरंजीखेड़ा तथा **दक्षिणी राजस्थान में गिलुंद** तथा **आहर** में मिले काले एवं लाल मृद्भांडो के स्वरूप, बनावट एवं चमक के आधार पर समानता है। इस संस्कृति का समय 2900 ईसा पूर्व के लेकर ई. युग की आरंभिक शताब्दियों तक फैला हुआ था।

3. चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति

वर्ष 1946 ई. में अहिच्छत्र में चित्रित धूसर मृद्भाडो की खोज के बाद से उत्तरी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में ये बड़ी संख्या में प्रकाश में आये हैं। इनमें से 30 स्थानों की खुदाई हुई हैं, जिसमें मुख्य रोपड़ (पंजाब), **भगवानपुरा,** (हरियाणा), नोह (राजस्थान), **आलमगीरपुर, अहिच्छत्र, हस्तिनापुर, अतरंजीखेड़ा, जखेड़ा तथा मथुरा** (उत्तर प्रदेश) हैं।

अध्याय 6

महाजनपदों से नंद तक राज्य निर्माण

छठीं शताब्दी ई.पू. से लेकर चौथी शताब्दी ई.पू. के मध्य तक भारतीय इतिहास में अनेक महत्वपूर्ण घटनाऐं घटीं। इस युग में जहां एक ओर **महाजनपदों** का उदय हुआ तथा **सामाजिक-आर्थिक** और **राजनीतिक जीवन** में बदलाव आया, तो दूसरी तरफ **धार्मिक क्षेत्र** में उल्लेखनीय **क्रान्ति** हुई। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप पुरानी धार्मिक मान्यताऐं बदल गईं और नये धर्मों का उदय हुआ। इसी अवधि में मगध में **साम्राज्यवाद** का विकास हुआ, जिसने अन्ततः मौर्य साम्राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

उत्तर वैदिक काल में कबीलाई राज्यों की जगह क्षेत्रीय राज्य स्थापित करने की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। उतर वैदिक काल में हमें विभिन्न जनपदों का अस्तित्व दिखाई देता है। इस काल तक वर्तमान पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा पश्चिमी बिहार (झारखंड) में लोहे का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाने लगा था। लौह तकनीक ने लोगों के भौतिक जीवन में बड़ा परिवर्तन उत्पन्न कर दिया तथा इससे स्थायी जीवन-यापन की प्रवृत्ति सुदृढ़ हो गयी। **कृषि, व्यापार, उद्योग, वाणिज्य** आदि के विकास के चलते छोटे-छोटे जनों का स्थान जनपदों ने ग्रहण कर लिया जो ई. पू. छठीं शताब्दी तक आते-आते जनपद, महाजनपदों के रूप मे विकसित हो गये।

महाजनपदों का उदय

महाजनपदों के उदय के विषय में जानकारी वैदिक तथा बौद्ध साहित्य से प्राप्त होती है।

वैदिक साहित्यः वैदिक साहित्य ऋग्वेद में अनुष्ठान के तरीकों का उल्लेख है। ऋग्वेद में जनों का उल्लेख आता है, परन्तु जनपदों का नहीं है। जनपद शब्द वैदिक संहिताओं में भी 'जनपद' शब्द का प्रयोग नहीं मिलता है। सर्वप्रथम इसका प्रयोग ब्राह्मण ग्रंथों में हुआ है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि जनपदों का उदय ब्राह्मणकाल में हुआ। महात्मा बुद्ध के समय तक आते-आते इन जनपदों का पूर्ण विकास हो गया। **डॉ. वासुदेव शरण** अग्रवाल के अनुसार **"लगभग एक सहस्त्र ईस्वी पूर्व से पांच सौ ईस्वी पूर्व तक के युग को भारतीय इतिहास में जनपद या महाजनपद युग कहा** जा सकता है।" जिस प्रदेश में एक जन स्थायी रूप से बस गया, वही उसका जनपद (राज्य) हो गया।

प्रारम्भ में जनपद में किसी एक वर्ग विशेष के मनुष्य ही रहते थे। अतः उनका जीवन एक ही जातीय, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परम्परा के ऊपर संगठित था, परन्तु कालान्तर में अन्य वर्ग एवं जातियों के लोग भी आकर उनके जनपदों में बसने लगे। इससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान तो हुआ, परन्तु बहुत समय तक राजसत्ता एकमात्र आदि जन के प्रतिनिधियों के हाथ में रही। प्रत्येक जनपद में बहुसंख्यक गाँव और नगर होते थे।

काशिकाकार इतिहासकार ने लिखा है कि ग्रामों का समुदाय ही जनपद है। धीरे-धीरे जनपदों की संख्या कम होने लगी। छोटे जनपद बड़े जनपदों में परिवर्तित होने लगे। इस भांति देश में महाजनपद काल का उदय हुआ।

बौद्ध साहित्यः संघ के नियमों को बताने वाली विनय पिटक, बुद्ध के उपदेशों का संग्रह सुत्त पिटक तथा अलौकिक समस्याओं का उल्लेख करने वाली अभिधम्म पिटक से महाजनपद के विषय में जानकारी मिलती है। बुद्ध के पूर्व जन्मों के विषय को बताने वाली जातक कथाएं सुत्त पिटक का अंग है, जो उस समय के समाज की स्पष्ट जानकारी प्रदान करती है।

महाजनपद

महाजनपद नई राजनैतिक-भौगोलिक इकाइयां, जिनमें गहपति, व्यापारी तथा शासक एवं शासित के बीच संबंध के नए प्रतिमान दिखाई पडे, महाजनपद कहलाए। महाजनपद का तात्पर्य मगध, कौशल आदि ऐसे विशाल जनपदों से था, जिनपर शक्तिशाली राजा अथवा अभिजात वर्ग राज करते थे।

बौद्ध ग्रंथों में सोलह महाजनपदों के विषय में उल्लेख मिलता है। बौद्ध ग्रथों में जहां भी बुद्ध का उल्लेख मिलता है वहां बार-बार इन महाजनपदों की मुख्य बस्तियों का भी उल्लेख प्राप्त होता है।

महात्मा बुद्ध के आविर्भाव के पूर्व भारतवर्ष **16 महाजनपदों** में विभक्त था। बौद्ध ग्रंथ **अंगुत्तरनिकाय, जो कि सुत्त पिटक का अंग है,** में इनके नाम निम्न प्रकार मिलते हैं-1. अंग, 2. मगध, 3. काशी, 4. कोशल, 5. वज्जि, 6. मल्ल, 7. चेदि, 8. वत्स, 9. कुरु, 10. पांचाल, 11. मत्स्य, 12. शूरसेन, 13. अस्सक, 14. अवन्ति, 15. गांधार, 16. कम्बोज।

महावस्तु में इसी प्रकार की सूची मिलती है, लेकिन इसमें गांधार और कम्बोज के स्थान पर शिवि (पंजाब या राजपूताना) तथा दर्शाण (मध्य भारत) का उल्लेख किया गया है। भगवती सूत्र (जैन ग्रंथ) में भी 16 राज्यों का जिक्र किया गया है- 1.अंग, 2. बंग, 3. मगध 4. मलय, 5. मालव, 6. अच्छ, 7. वच्छ, 8. कच्छ, 9. पाघ, 10. लाघ, 11. वज्जि, 12.मोलि, 13. काशी, 15. कोशल, 15. अवा तथा 16. सम्मुतर।

दोनों सूचियों में 1. अंग, 2. मगध, 3. वत्स, 4. वज्जि, 5.काशी, 6. कोशल समान हैं। जैन सूची में मालवा और बौद्ध सूची के क्रमशः अवन्ति और मल्ल का उल्लेख है। परन्तु शेष जनपदों में अन्तर है। जैन सूची बाद की प्रतीत होती है। बौद्ध ग्रंथ में उल्लिखित सभी राज्य सर्वसत्ता सम्पन्न गण अथवा संघ राज्य थे। इनमें वज्जि, मल्ल तथा शूरसेन आदि प्रमुख गणराज्य थे और मगध, वत्स, अवन्ति तथा कौशल आदि प्रमुख राजतंत्र थे। राजतंत्रों में कुलीन तन्त्रात्मक व्यवस्था थी।

अध्याय 7

मौर्य साम्राज्य

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

भारत पर अलेक्जेंडर के आक्रमण के समय, नंद वंश के शासन काल में मगध साम्राज्य दुर्जेय शक्ति के रूप में उभरा, जिसे मौर्य शासकों ने अपने शासनकाल के दौरान चरम पर पहुंचाया था।

मौर्यकालीन इतिहास, सभ्यता और संस्कृति की जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त होती है। इन स्रोतों में साहित्यिक साक्ष्य, विदेशी वृतांत तथा पुरातात्त्विक प्रमाण महत्त्वपूर्ण हैं। इन स्रोतों का विवरण इस प्रकार है:

1. साहित्यिक स्रोत

मौर्यकालीन इतिहास के संबंध में विविध प्रकार के साहित्यिक ग्रंथों से जानकारी मिलती है। ब्राह्मण, बौद्ध तथा जैन साहित्य इस वंश के इतिहास पर प्रचुर प्रकाश डालते हैं। ब्राह्मण साहित्य में पुराण,बौद्ध ग्रथों में दीपवंश, महावंश, महावंशटीका, महाबोधिवंश और जैन सहित्यों में भद्रबाहु का कल्पसूत्र तथा हेमचन्द्र का परिशिष्टपर्वन प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त कौटिल्य का अर्थशास्त्र एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इन साहित्यिक स्रोतों का अलग-अलग विवरण प्रस्तुत करना समीचीन प्रतीत होता है।

पुराण: पुराणों से मौर्यों के विषय में अनेक महत्वपूर्ण जानकारी हासिल होती है। विष्णु पुराण से विदित होता है कि मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त का जन्म नंद राजा की **मुरा** नामक पत्नी से हुआ था।

ब्राह्मण ग्रंथ चन्द्रगुप्त मौर्य को **शूद्र या नीच कुल** में उत्पन्न बताते हैं। पुराणों में ऐतिहासिक घटनाओं के साथ-साथ काल्पनिक प्रसंगों का भी वर्णन किया गया है।

मौर्य साम्राज्य के प्रांत

क्र.	प्रांत	राजधानी	क्र.	प्रांत	राजधानी
1.	उत्तरापथ	तक्षशिला	2.	अवन्ति	उज्जयिनी
3.	कलिंग	तोसली	4.	दक्षिणापथ	सुवर्णगिरि
5.	प्राशी	पाटलिपुत्र			

अर्थशास्त्र: मौर्यवंश के प्रशासन संबंधी जानकारी का साक्ष्य हमें कौटिल्य के अर्थशास्त्र से प्राप्त होता है। इसका ज्ञान **सर्वप्रथम विद्वानों को 1909 ई.** में हुआ। सम्पूर्ण अर्थशास्त्र को **15 अधिकरण एवं 180 प्रकरणों** में विभक्त किया गया है। इस ग्रंथ से न केवल राजनैतिक

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

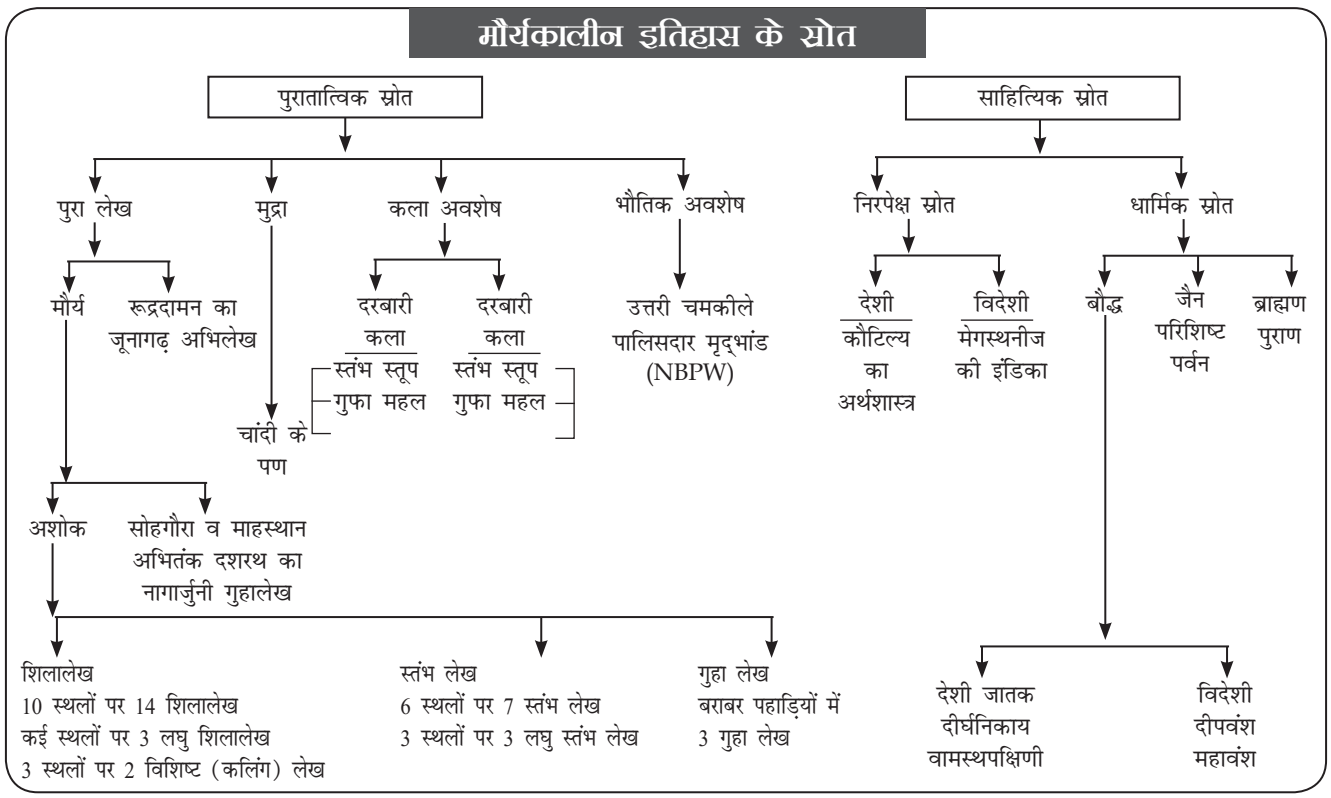

अध्याय 8

मौर्योत्तर भारत

मौर्य राजाओं के काल में ही भारत का राजनीतिक परिदृश्य **विकेन्द्रीकरण का शिकार** हो गया। ऐसी स्थिति में दो तरह की प्रवृत्तियां सामने आईं। (1) प्रवृत्ति के तहत आंतरिक शक्तियां पारस्परिक संघर्षों में उलझी रहीं और **शुंग, कण्व** एवं सातवाहन जैसे राजवंशों ने उपमहाद्वीप के अधिकांश भू-भाग पर शासन किया। (2) **प्रवृत्ति** को प्रथम प्रवृत्ति का ही **तार्किक परिणाम** माना जा सकता है, जिसके तहत पश्चिमोत्तर क्षेत्र में बाह्य शक्तियों की गतिविधियां सक्रिय रूप से दिखाई दीं। सर्वप्रथम बैक्ट्रिया के यवन, उसके बाद पार्थियन, फिर शक और अंततः कुषाणों ने भारत पर सफल आक्रमण किए। इस प्रकार मध्य एशिया के साथ संपर्क के कारण आर्थिक क्रिया-कलापों एवं सांस्कृतिक साहचर्य का नवीन रूप उपस्थित हुआ।

मौर्योत्तर काल के स्त्रोत

मौर्योत्तर काल के इतिहास के विषय में जानने के लिए साहित्यिक और अभिलेखिय स्त्रोत महत्वपूर्ण है।

साहित्यिक स्त्रोतः इस अवधि के अध्ययन के लिए पतंजलि के **महाभाष्य, दिव्यावदान, पुराण, कालिदास** के **मालविकाग्निमित्र** तथा बाणभट्ट के हर्षचरित प्रमुख है। इसके अलावा **ग्रीक** और **लैटिन** स्त्रोत से इस अवधि के शासकों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। इसके साथ ही पाली ग्रंथ मिलिंद-पन्हा से इस अवधि के यवन राजा मिनंडर और बौद्ध धर्म के बारे में जानकारी मिली है।

अभिलेखिय स्त्रोतः अयोध्या, विदिशा और भरहुत से प्राप्त शिलालेखों से इस अवधि के शासकों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। इसके साथ ही उत्तर भारत से प्राप्त सिक्कों से उस समय के शासको के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। इन सिक्कों पर उस समय के शासकों के नाम अंकित हैं। इस अवधि के राजनीतिक इतिहास के विषय में जानकारी मध्य एशिया के स्त्रोतों से होती है। खरोष्ठी लिपि में लिखे शिलालेख गंधार में संख्या में पाए गए हैं और इसके साथ ही मध्य एशिया से कई खरोष्ठी दस्तावेज प्राप्त किए गए हैं।

शुंग राजवंश (185 ई.पू.-75 ई.पू.)

पुष्यमित्र शुंग इस राजवंश का **संस्थापक** था, जिसने अंतिम **मौर्य** राजा की हत्या कर मगध के सिंहासन पर अधिकार किया। इसकी पुष्टि कन्नौज के हर्षवर्धन के दरबारी **कवि बाण** (बाणभट्ट) द्वारा की गई है। शुंग ब्राह्मण थे और कभी-कभी यह आरोप लगाया जाता है कि पुष्यमित्र ने ब्राह्मण विद्रोह के रूप में मौर्य राजा की हत्या की। किंतु यह आरोप अब निराधार साबित हो चुका है कि मौर्य शासक असहिष्णु थे क्योंकि पुष्यमित्र स्वयं ब्राह्मण था और मौर्यकाल में सेनापति जैसे उच्च पद पर नियुक्त था।

शुंग इतिहास के स्रोत

1. **साहित्यः** गार्गी संहिता, महाभाष्य, दिव्यावदान, मालविकाग्निमित्र, हर्षचरित, लामा तारानाथ का विवरण
2. **अभिलेखः अयोध्या, विदिशा** (भिलसा)
3. **सिक्केः** कौशाम्बी, अयोध्या, अहिच्छत्र तथा मथुरा से प्राप्त

पाणिनि के अनुसार शुंग भारद्वाज गोत्र के थे। **कालिदास के मालविकाग्निमित्र** में पुष्यमित्र के पुत्र **अग्निमित्र** का वर्णन है, जिसे बिम्बिका कुल से संबंधित माना गया है।

पुष्यमित्र द्वारा मौर्य सिंहासन पर अधिकार का उल्लेख पुराणों और बाणभट्ट की हर्षचरित में है। **राजनैतिक महत्वाकांक्षा** और आंतरिक दुर्बलता को ही **मौर्य-साम्राज्य** के पतन का कारण माना जाता है। डा. हरप्रसाद शास्त्री ने शुंगों को **पारसी** तथा दिव्यावदान नामक पुस्तक ने मौर्य माना है। **परंतु वास्तविकता** यह है कि **शुंग ब्राह्मण** थे। क्योंकि कालिदास ने उन्हें बैम्बिक वंशीय, बौधायन सूत्र ने बैम्बिक कश्यप गोत्रिक तथा तारानाथ ने ब्राह्मण राजा कहा है।

गार्गी संहिता और युग पुराण से यह पता चलता है कि भारत पर हुए **यवन आक्रमण** के प्रतिरोध की शक्ति मौर्य राजाओं में नहीं थी। आक्रमणकारी पश्चिमोत्तर क्षेत्र के अधिकांश भाग पर अपना अधिकार स्थापित कर चुके थे, यहां तक कि उनकी प्रतिध्वनि अयोध्या, काशी एवं पाटलिपुत्र में भी सुनाई पड़ रही थी। परंतु पुष्यमित्र ने उनका सामना किया और एक मजबूत साम्राज्य की स्थापना की।

उत्तर भारत के एक बड़े हिस्से में उसका साम्राज्य विस्तृत था। उनका साम्राज्य सम्पूर्ण गंगा घाटी, नर्मदा नदी क्षेत्र एवं उत्तरी दक्कन में विदर्भ और बरार तक विस्तृत था। कुछ समय के लिये सिन्धु तट क्षेत्र भी उसके साम्राज्य के अन्तर्गत आते थे।

पाटलिपुत्र उसके शासन का मुख्य क्षेत्र था, जबकि दूसरा प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र **विदिशा** में था। **अयोध्या अभिलेख** से पता चलता है कि पुष्यमित्र ने **दो बार अश्वमेध** यज्ञ किये एवं ब्राह्मण धर्म को बढ़ावा दिया। उसके एक अश्वमेघ यज्ञ के प्रधान पुरोहित पतंजलि थे।

पतंजलि के महाभाष्य, 'गार्गी संहिता' तथा **'मालविकाग्निमित्र'** से पता चलता है कि पुष्यमित्र ने यवनों को परास्त किया, जो उसकी महान उपलब्धि थी। उसने विदर्भ राज्य के शासक यज्ञसेन से कुपित होकर विदर्भ को दो भागों में बांट दिया और एक भाग माधवसेन तथा दूसरा भाग यज्ञसेन को देकर उनसे अपनी अधीनता स्वीकार करवा ली। कलिंग राज्य से भी पुष्यमित्र का संघर्ष हुआ था। पुष्यमित्र **ब्राह्मणवादी** था, इसलिये कहा जाता है कि उसने **बौद्धों पर काफी** अत्याचार किये। परंतु यह भ्रामक मालूम पड़ता है। क्योंकि उसी के काल में **भरहुत** एवं

अध्याय 9

संगम काल

संगमयुगीन संस्कृति

पाषाण युगीन संस्कृति के पश्चात् **सुदूर दक्षिण में महापाषाण संस्कृति** का उद्‌भव हुआ। इस संस्कृति के अनेक पुरातात्विक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। खारवेल के एक पुराने शिलालेख में तमिल देश के राज्यों का उल्लेख मिलता है। खारवेल ईस्वी पूर्व दूसरी सदी के पूर्वार्द्ध में कलिंग का शासक था। ऐसा कहा जाता है कि अपने शासन के ग्यारहवें वर्ष (ईस्वी पूर्व 165) में उसने तमिल राज्य के **113 वर्ष पुराने** तमिल देश **'संघात्मक'** को नष्ट कर दिया। इसके अतिरिक्त मेगास्थनीज के विवरण तथा अशोक के अभिलेख में भी इसका उल्लेख मिलता है।

इस संस्कृति के लोग **लोहे के** प्रयोग से **परिचित थे** और **काले तथा लाल मृदभाण्ड** का प्रयोग करते थे। इस संस्कृति के लोग अपनी विशिष्ट प्रकार की कब्रगाह के लिए प्रसिद्ध थे, जिनको **'महापाषाण'** कहते हैं। ये कब्रगाह बड़े-बड़े पत्थर के टुकड़ों से घिरे होते थे। इन कब्रों में न केवल दफनाए गये लोगों के **अस्थि पंजर**, बल्कि मिट्‌टी के बर्तन और **लोहे की वस्तुएं** भी मिली हैं।

इस संस्कृति में शवों के साथ वस्तुओं को कब्रों में दफनाने की प्रथा थी जिससे ज्ञात होता है कि मृत व्यक्तियों को उनकी आवश्यकता परलोक में पड़ती होगी। ये वस्तुयें उनके **जीविकोपार्जन के स्त्रोतों** के बारे में संकेत देती हैं। हम उनमें बाणाग्र, बरछे की नोक, फावड़े तथा हंसिया पाते हैं। ये सब चीजें लोहे की बनी होती थीं। लोहे के त्रिशूल भी महापाषाण कब्रों में पाये गये हैं।

संगम साहित्य से भी सुदूर दक्षिण के तीन शक्तिशाली **राज्यों चेर, पाण्ड्य तथा चोल शासकों** के आरंभिक इतिहास एवं उस समय की संस्कृति का उल्लेख मिलता है।

संगमकालीन राजकीय चिन्ह

चेर : धनुष
चोल : बाघ या चीता
पांड्य : मछली

दक्षिण भारत का **क्रमबद्ध इतिहास संगम साहित्य** (तीसरी या चौथी सदी के साहित्य) से प्राप्त होता है। 'संगम' एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ **'सभा'** होता है। इस सभा में तमिल कवि या विद्वान एकत्र होते थे। प्रत्येक कवि अथवा लेखक अपनी रचनाओं को संगम के समक्ष प्रस्तुत करता था तथा इसकी स्वीकृति प्राप्त हो जाने के बाद किसी भी रचना का प्रकाशन सम्भव था।

दक्षिण भारत में पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में कुल **तीन संगम आयोजित** किये गये। इन संगमों में संकलित साहित्य को ही **'संगम साहित्य'** के नाम से जाना जाता है। संगम साहित्य विभिन्न आठ संग्रह ग्रंथों में समाहित मिलता है। इन संगमों का विवरण इस प्रकार है-

प्रथम संगमः प्रथम संगम का आयोजन पाण्ड्यों की प्राचीन राजधानी **मदुरा** में हुआ था। इसकी अध्यक्षता **अगस्त्य ऋषि** ने की। अगस्त्य ऋषि को ही दक्षिण में आर्य सभ्यता के प्रचार का श्रेय प्रदान किया जाता है। इस संगम में 549 विद्वानों ने भाग लिया। इस प्रथम संगम को 89 पाण्ड्य शासकों का संरक्षण प्राप्त था। इस संगम के कार्यकाल में 4499 विद्वानों को अपनी रचनाएं प्रकाशित करने की अनुमति दी गयी थी।

यह संगम 4,400 वर्षों तक चला। इसमें अक्कतिमय परिपादल, मदुनरै इत्यादि ग्रंथों का संकलन किया गया। इनमें कोई भी ग्रंथ आज उपलब्ध नहीं है। मदुरा नगर के समुद्र में विलीन हो जाने के कारण प्रथम संगम भी समाप्त हो गया। इस संगम के सदस्यों में प्रमुख थे-तिरिपुरमेरिध, मुरुगवल तथा मुदिनागरायर।

द्वितीय संगमः मदुरा के पतन के पश्चात् **पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण** में दूसरा संगम नये **नगर कपाटपुरम्** अथवा **अलैवे** में आयोजित किया गया। इस संगम की अध्यक्षता भी **ऋषि अगस्त्य** ने की। बाद में उनका स्थान उनके शिष्य तोलकाप्पियर ने लिया। इस संगम में तमिल भाषा के 49 विद्वानों ने भाग लिया। इस द्वितीय संगम को 59 पाण्ड्य शासकों ने संरक्षण प्रदान किया। परम्परानुसार इस संगम में 3700 कवियों को अपनी रचना प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की गयी। यह संगम 3700 वर्षों तक चला।

संगमकालीन प्रमुख स्थल

1.	वंजी या करूर	:	चेर राज्य की प्रशासनिक राजधानी
2.	मुसिरी	:	चेर राज्य की तटीय (बंदरगाह) राजधानी
3.	उरैयुर	:	चोल राज्य की प्रशासनिक राजधानी
4.	कावेरी पट्टनम	:	चोल राज्य की तटीय राजधानी
5.	मदुरई	:	पाण्ड्य राज्य की प्रशासनिक राजधानी
6.	कोरकई	:	पाण्ड्य राज्य की तटीय राजधानी
7.	कांची	:	पल्लवों की राजधानी
8.	पट्टिनम	:	समुद्र किनारे का नगर
9.	सलाई	:	मगर की मुख्य सड़क
10.	टेरु	:	नगर की मुख्य गली
11.	चेरी	:	उपनगर

इस संगम के दौरान जिन ग्रंथों की रचना हुई, उनमें अकतियम, मापुरानम, भूतपुरानम, व्यालमलय, तोलकाप्पियम इत्यादि उल्लेखनीय हैं। इस संगम द्वारा संकलित ग्रंथों में एकमात्र **'तोलकाप्पियम'** ही अवशिष्ट है। यह पुस्तक तमिल व्याकरण की विख्यात पुस्तक है। इस ग्रंथ की रचना **ऋषि अगस्त्य** के एक शिष्य **तोलकाप्पियर** ने की थी। द्वितीय

मध्यकालीन भारत

अध्याय 1

प्रारंभिक मध्यकालीन भारत के प्रमुख राजवंश

हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् से लेकर बारहवीं शताब्दी ईस्वी तक का काल उत्तर भारत के इतिहास में **'राजपूत काल'** के नाम से जाना जाता है। सातवीं-आठवीं शदी से हमें राजपूतों के उत्पति के ऐतिहासिक प्रमाण प्राप्त होने लगते हैं तथा बारहवीं शदी तक आते-आते उत्तर भारत में उनके **कुल 36 वंश** अत्यन्त प्रसिद्ध हो जाते हैं। **गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट, चालुक्य, चौहान, चंदेल, परमार, गहड़वाल** आदि सभी राजपूत वंश थे। राजपूत बड़े वीर तथा स्वाभिमानी होते थे, और साहस, त्याग, देशभक्ति आदि के गुण उनमें कूट-कूट कर भरे हुए थे।

परन्तु पारस्परिक संघर्ष तथा द्वेष-भाव के कारण वे देश की रक्षा नहीं कर सके, और देश की स्वाधीनता को उन्होंने विदेशियों के हाथों सौंप दिया।

ऐतिहासिक स्रोत

राजपूतों के इतिहास को जानने के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं

अभिलेख: निस्संदेह अभिलेख साहित्यिक रचनाओं से अधिक विश्वसनीय स्रोत प्रमाणित होते हैं। फिर भी प्रशस्ति रूप (ग्वालियर प्रशस्ति, ऐहोल अभिलेख आदि) में होने के कारण इनमें उल्लिखित सभी बातों को अक्षरश: स्वीकार नहीं किया जा सकता। ऐसी परिस्थितियों में दूसरे राजवंशों के, विशेषकर उनके प्रतिद्वंद्वियों के अभिलेखों में पाये गये वर्णनों को भी जांचना आवश्यक है।

साहित्यिक रचनाएं: साहित्यिक ग्रन्थों में **नयचंद्रसूरि** का **हम्मीर महाकाव्य, पद्मगुप्त** द्वारा लिखित **'नवसहसांकचरित' हलायुध** का 'पिंगलसूत्रवृत्ति' मुख्य हैं। इनके अतिरिक्त, 'कुमारपाल चरित', 'वर्णरत्नाकर', **'पृथ्वीराजरासो'** आदि कृतियां राजपूतों का इतिहास जानने में सहायक हैं।

राजपूतों की उत्पत्ति

ऐसा माना जाता है कि राजपूत शब्द एक जाति या वर्ण विशेष के लिए देश में मुसलमानों के आने के बाद प्रचलित हुआ। ऐतिहासिक साक्ष्य- 'राजपूत' या 'रजपूत' शब्द संस्कृत के 'राजपुत्र' का अपभ्रंश है। प्राचीन काल में 'राजपुत्र' शब्द किसी जाति के लिए नहीं बल्कि क्षत्रिय राजकुमारों या राजवंश से सम्बन्धित व्यक्तियों के लिए ही प्रयुक्त होता था।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र, अश्वघोष के ग्रन्थों, वाणभट्ट के हर्षचरित और कादम्बरी आदि में भी राजपुत्र शब्द का उल्लेख किया गया है, परन्तु ह्वेनसांग ने राजाओं का वर्णन करते हुए उनको क्षत्रिय लिखा है, राजपूत नहीं। 'राजपुत्र' शब्द का प्रयोग जो पहले राजकुमार के अर्थ में किया जाता था, पूर्व-मध्य काल में सैनिक वर्गों तथा छोटे-छोटे जमींदारों के लिए किया जाने लगा।

वस्तुत: आठवीं शती के उपरान्त 'राजपूत' शब्द शासक वर्ग का पर्याय बन जाता है।

राजपूतों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में दो मत प्रचलित हैं-

1. विदेशी इतिहासकारों का मत और
2. भारतीय इतिहासकारों का मत

1 विदेशी इतिहासकारों का मत

कर्नल जेम्स टाड.: राजपूतों की विदेशी उत्पत्ति के मत का प्रतिपादन सर्वप्रथम कर्नल जेम्स टाड ने किया। उनके अनुसार राजपूत विदेशी सीथियन जाति की संतान थे। इस मत का आधार सीथियन एवं राजपूत जातियों की कुछ सामाजिक तथा धार्मिक प्रथाओं में समानताएं हैं, जो टॉड के अनुसार इस प्रकार हैं-

1. रहन-सहन तथा वेष-भूषा में समानता
2. मांसाहार का प्रचलन
3. रथों पर सवार होकर युद्ध करना
4. यज्ञों का प्रचलन

प्रमुख राजवंश एवं उनकी राजधानी

राजवंश	संस्थापक	राजधानी
पालवंश	गोपाल	मुदगिरि (मुंगेर) - 750 ई०
प्रतिहार वंश	हरिश्चन्द्र (वास्तविक संस्थापक नागभट्ट I)	कन्नौज
राष्ट्रकूट वंश	दंतिदुर्ग	एलिचपुर (बरार) 752 ई०, बाद में मान्य खेत
सेन वंश	सामंत सेन (वास्तविक संस्थापक विजय सेन)	राढ़ (बंगाल)
कलचुरी वंश	कोकल्ल प्रथम	जबलपुर, त्रिपुरी (854 ई०)
चंदेल वंश	नन्नुक	जेजाक भुक्ति, बुंदेलखंड (9वीं सदी)
चौहान वंश	वासुदेव	शाकम्भरी (अजमेर) (आधुनिक सांभर)
गहड़वाल वंश	चंद्रदेव	कन्नौज (1080-85 ई.)
परमार वंश	सीयक हर्ष	प्रारंभ में उज्जैन, बाद में धारा
हिन्दुशाही वंश	कल्लर	उदभाण्डपुर

चूंकि उपर्युक्त प्रथाओं का प्रचलन सीथियन तथा राजपूत दोनों ही समाजों में था, अत: इस आधार पर कर्नल टॉड राजपूतों को सीथियन जाति का वंशज मानते हैं।

विलियम क्रुक-कर्नल जेम्स टाड के मत का समर्थन करते हुए विलियम क्रुक ने प्रतिपादित किया है कि तत्कालीन समाज में कई विदेशी जातियां निवास करती थीं। ब्राह्मणों का बौद्ध आदि नास्तिक सम्प्रदायों से द्वेष था। अत: उन्होंने कुछ विदेशी जातियों को शुद्धि-संस्कार द्वारा पवित्र करके भारतीय वर्णव्यवस्था में स्थान प्रदान कर दिया। इन्हीं को राजपूत कहा जाने लगा।

स्मिथ: स्मिथ के अनुसार उत्तर-पश्चिम की राजपूत जातियों-प्रतिहार, चौहान, परमार, चालुक्य आदि की उत्पत्ति शकों तथा हूणों से हुई थी। इसी प्रकार गहड़वाल, चन्देल, राष्ट्रकूट आदि मध्य तथा दक्षिणी क्षेत्र की जातियां गोंड, भील जैसी आदिम जातियों की सन्तानें थीं।

स्मिथ की धारणा है कि शक, कुषाण आदि विदेशी जातियों ने हिन्दू धर्म ग्रहण कर लिया। वे कालान्तर में भारतीय समाज में पूर्णतया घुल-मिल गयीं। उन्होंने यहां की संस्कृति को अपना लिया। इन विदेशी शासकों को भारतीय समाज में क्षत्रियत्व का पद प्रदान कर दिया गया।

ऐसा प्रतीत होता है कि इन विदेशी जातियों को शुद्धि द्वारा भारतीय समाज में सम्मिलित करने के उद्देश्य से ही **'पृथ्वीराज रासो'** में अग्निकुण्ड द्वारा राजपूतों की उत्पत्ति बतायी गयी है।

2 भारतीय इतिहासकारों का मत

गौरी शंकर, हीराचन्द्र ओझा तथा सी.वी. वैद्य: राजपूतों की उत्पत्ति के उपर्युक्त विदेशी सिद्धान्त का विरोध गौरी शंकर, हीराचन्द्र ओझा तथा सी.वी. वैद्य जैसे कुछ भारतीय विद्वानों ने किया है। इनकी सम्मति में राजपूत विशुद्ध भारतीय क्षत्रियों की ही सन्तान थे जिनमें विदेशी रक्त का मिश्रण बिल्कुल भी नहीं था। इन विद्वानों के प्रमुख तर्क इस प्रकार हैं-

1. टॉड ने राजपूत तथा सीथियन जातियों में जिन समान प्रथाओं का संकेत किया है, वे कल्पना पर आधारित हैं। ये सभी प्रथाएं भारत की प्राचीन क्षत्रिय जातियों में देखी जा सकती हैं।
2. क्रुक के निष्कर्ष की पुष्टि किसी भी ऐतिहासिक साक्ष्यों से नहीं होती है। यह विचार कोरी कल्पना की उपज है।
3. इस बात का कोई प्रमाण नहीं कि **'खजर'** नामक किसी जाति ने कभी भी भारत के ऊपर आक्रमण किया हो। भारतीय तथा विदेशी किसी भी साक्ष्य में इस जाति का उल्लेख नहीं मिलता है।
4. **'पृथ्वीराज रासो'** में वर्णित अग्निकुल की कथा ऐतिहासिक नहीं लगती। इस कथा का उल्लेख रासो की प्राचीन पाण्डुलिपियों में नहीं मिलता है। परन्तु ये दोनों ही मत अतिवादी हैं। वस्तुस्थिति यह है कि राजपूत वंश की उत्पत्ति भारतीय समाज की विविध जातियों तथा जनजातियों के साथ-साथ उन विदेशी आक्रामक जातियों से भी हुई जो भारत में बस गयी थीं और हिन्दू समाज ने जिन्हें आत्मसात कर लिया था। यही कारण है कि पूर्व मध्य काल के कई ग्रन्थों में राजपूतों को मिश्रित वर्ण का बताया गया है। इसमें सन्देह नहीं कि इस वंश में उच्च वर्ण के साथ-साथ निम्न वर्ण के रक्त का भी मिश्रण था।

मनुस्मृति: 'मनुस्मृति' में शकों को **'व्रात्य क्षत्रिय'** कहा गया है। इन जातियों के वीरतापूर्वक कृत्यों को उनके दरबारी चारणों ने बहुत बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया तथा उनकी तुलना रामायण और महाभारत के वीरों से की।

भण्डारकर: भण्डारकर ने भी विदेशी उत्पत्ति के मत का समर्थन किया है। उनके अनुसार अग्निकुल के चार राजपूत वंश प्रतिहार, परमार, चौहान तथा सोलंकी-गुर्जर नामक विदेशी जाति से उत्पन्न हुए थे। चौहान तथा गुहिलोत जैसे कुछ वंश विदेशी जातियों के पुरोहित थे। उन्होंने आगे बताया है कि गुर्जर- प्रतिहार वंश के लोग निश्चयत: **'खजर'** नामक जाति की सन्तान थे जो हूणों के साथ भारत में आयी थी। पुराणों में हैहय नामक राजपूत जाति का उल्लेख शक, यवन आदि विदेशी जातियों के साथ किया गया है। इससे भी राजपूतों का विदेशी होना सिद्ध होता है।

प्रमुख विद्वान

राजा	दरबारी विद्वान
धर्मपाल (पालवंश)	हरिभद्र (बौद्ध विद्वान)
रामपाल (पालवंश)	संध्याकर नन्दी
नयपाल (पालवंश)	विक्रमशिला महाविहार के प्रधान 'आचार्य दीपंकर श्री ज्ञान अतिश'
महेन्द्रपाल-I (प्रतिहार वंश)	राजशेखर
अमोघवर्ष	जिनसेन, महावीराचार्य (राष्ट्रकूट वंश) शाक्टायन
गोविन्दचन्द्र (गहड़वाल वंश)	लक्ष्मीधर
जयचन्द (गहड़वाल वंश)	श्री हर्ष
यशोवर्मन	वाकपतिराज
लक्ष्मण सेन (सेन वंश)	जयदेव, हलायुध, धोयी
वाक्पति मुंज (परमार वंश)	पदमगुप्त, धनंजय

गुर्जर-प्रतिहार वंश

अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था जो गुर्जरों की शाखा से सम्बन्धित होने के कारण इतिहास में गुर्जर-प्रतिहार कहा जाता है। इस वंश की प्राचीनता पांचवीं शती तक जाती है। पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में गुर्जर जाति का उल्लेख सर्वप्रथम हुआ है।

ऐतिहासिक स्रोत

अभिलेख: गुर्जर-प्रतिहार वंश के इतिहास के प्रामाणिक साधन उसके बहुसंख्यक अभिलेख हैं। इनमें सर्वाधिक उल्लेखनीय मिहिरभोज का ग्वालियर अभिलेख है जो एक प्रशस्ति के रूप में है। यह प्रतिहार वंश के शासकों की राजनैतिक उपलब्धियों तथा उनकी वंशावली को ज्ञात करने का मुख्य साधन है।

साहित्यिक रचनाएं: प्रतिहार युग में अनेक साहित्यिक कृतियों की रचना हुई। संस्कृत का प्रसिद्ध विद्वान 'राजशेखर' प्रतिहार राजाओं महेन्द्रपाल प्रथम तथा उसके पुत्र महीपाल प्रथम के दरबार में रहा था।

आधुनिक भारत

अध्याय 1

यूरोपवासियों का प्रवेश

भारत तथा यूरोप के व्यापारिक सम्बन्ध प्राचीनकाल से ही प्रगाढ़ रहे हैं। विशेषकर रोमन लोगों के साथ दक्षिण तथा पश्चिमी भारत का काफी घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध रहा है, जिसके पुरातात्त्विक प्रमाण भी हमें प्राप्त होते हैं। सातवाहनों तथा चोलों के शासनकाल में भारत का समुद्री व्यापार काफी उन्नत रहा था। पश्चिमी तट पर भड़ौच (बेरीगाजा), सूरत, चौल आदि बन्दरगाह थे। इनमें आधुनिक **भड़ौच** को, जिसे भारतीय स्रोतों में **'भरुकच्छ'** कहा गया है, पश्चिमी तट पर सबसे प्राचीन एवं सबसे बड़ा प्रवेश द्वार था और पश्चिमी एशिया के साथ अधिकांश व्यापार इसी के माध्यम से होता था।

यहाँ से निर्यात होनेवाली वस्तुओं में मसाले, हीरे, नीलम, रत्न, कछुए की पीठ की हड्डियाँ आदि प्रमुख थीं। **ईसा पूर्व पहली सदी** में लिखित **'पेरिप्लस ऑफ दी एरीथ्रियन सी'** में पूर्वी तट पर स्थित अरिकमेडु को **पेडोका** कहा गया है। **अरिकामेडु में 1945** ई. में एक विस्तृत खुदाई में एक विशाल **रोमन बस्ती मिली**, जो एक व्यापारिक केन्द्र था, यहाँ रोम निवासियों की रुचि तथा उनके द्वारा दिए गये नमूनों के आधार पर निर्माण कार्य भी होता था। यहाँ **रोमन सम्राट अगस्ट टाइबेरियस** तथा **नीरो के सोने के सिक्के** भी मिले हैं।

अगले चरण में यूरोप में पूर्वी देशों के माल की माँग में वृद्धि बारहवीं शदी में धर्मयुद्धों (The Crusades) के काल में हुई। यूरोप में पूर्वी देशों के मसालों की माँग निरन्तर रहती थी, क्योंकि जाड़े में चारे के अभाव के कारण जानवरों को मारकर उनके माँस को नमक लगाकर सुरक्षित कर लिया जाता था, जिसे स्वादिष्ट बनाने के लिए मसालों की जरूरत पड़ती थी। पन्द्रहवीं शताब्दी से सत्रहवीं शती के बीच में यूरोपवासियों की साहसिक समुद्री यात्राओं के फलस्वरूप भौगोलिक अनुसंधानों के अन्तर्गत भारत के लिए नए समुद्री मार्ग की खोज हुई।

पुर्तगालियों का आगमन

1488 ई. में अफ्रीकी महाद्वीप के दक्षिणी किनारे **केप ऑफ गुड होप** तक पहुँच गया। वहां से वास्कोडिगामा 1497 ई. में मालीन्दी तक तथा **1498 ई.** में एक अरब व्यपारी की सहायता से कालीकट तक पहुँचाया। जब उससे, उसके आने अक उद्देश्य पूछा गया तो उसने उत्तर दिया कि वह भारत में इसाई धर्म के प्रचार तथा गर्म मसाले के व्यापार के लिए आया है। इस प्रकार **1498** में, इस नए समुद्री मार्ग की खोज का श्रेय वास्कोडिगामा को जाता है।

पन्द्रहवीं शती के आरम्भ में पुर्तगाल के शासक **डॉन हेनरीक** जिसे **'हेनरी द नेवीगेटर'** (Henry the Navigator) कहा जाता था, ने सीधे भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज प्रारम्भ की थी।

इसके पीछे दो उद्देश्य थे, **प्रथम** अरबों एवं अपने यूरोपीय प्रतिस्पर्द्धियों यानि वेनिस तथा जेनेवा के व्यापारियों को समृद्ध पूर्वी व्यापार से बाहर करना तथा **दूसरा,** अफ्रीका एवं एशिया के काफिरों (गैर ईसाइयों) को ईसाई बनाकर तुर्की एवं अरबों की बढ़ती हुई शक्ति को संतुलित करना। वास्तव में ये दोनों लक्ष्य एक दूसरे के पूरक और समर्थक थे।

1453 ई. में तुर्कों द्वारा एशिया माइनर के जरिए यूरोप के पूर्वी देशों के साथ व्यापार (खासकर मसालों के) पर रोक लगा दी थी। इस रोक के कारण भी नए समुद्री मार्ग की खोज अनिवार्य हो गयी थी। **यूरोप में पुनर्जागरण** की वजह से भी समुद्री यात्राएँ प्रेरित हुई। इसके साथ ही **कुतुबनुमा** (Mariner's Compass) के आविष्कार तथा यह धारणा की पृथ्वी गोल है एवं पश्चिम की ओर चलकर पूर्व की ओर पहुँचा जा सकता है, इन सभी बातों ने मिलकर साहसिक समुद्री यात्राओं तथा उसके फलस्वरूप विभिन्न समुद्री भागों तथा भौगोलिक खोजों का मार्ग प्रशस्त किया।

1487 ई. में बार्थोलोम्यू डीयाज (Bartholomew Diaz) आशा अंतरीप (Cape of Good hope) पहुँचा तथा उसे तूफानी अंतरीप कहा।

पुर्तगाल की तरह ही प्रारम्भिक दौर में स्पेन की सरकार ने भी साहसिक समुद्री यात्राओं को सहायता दी। **1494 ई. में स्पेन के कोलबंस** ने उत्तरी अमेरिका की खोज की, लेकिन वास्तव में वह भारत की खोज के लिए निकला था।

1498 ई. को वास्को-डी-गामा ने यूरोप से भारत तक का पूरी तरह से समुद्री तथा एक नये मार्ग से यात्रा करते हुए भारत के पश्चिमी तट के कालीकट बन्दरगाह पर पहुँचा। उसने **'केप आफ गुड होप'** होते हुए अफ्रीका का पूरा चक्कर लगाते हुए यह यात्रा पूरी की थी। इस व्यापारिक यात्रा का तात्कालिक महत्त्व भले ही इतना दिखा हो कि वास्को-डी-गामा ने इस यात्रा से लौटते वक्त जो वस्तुएं यूरोप ले जाकर बेचीं, उनका मूल्य उसकी यात्रा खर्च से **60 गुना अधिक** था। लेकिन बाद में इस यात्रा के ऐतिहासिक परिणाम यूरोपवासियों के एशिया पर प्रभुत्व के रूप में सामने आये।

व्यापार की प्रकृति एवं स्वरूप: 15वीं सदी के मध्य में अफ्रीका में यूरोपीय देशों ने प्रवेश किया तो उन्हें प्रारंभिक पूँजी निर्माण का एक प्रमुख स्रोत प्राप्त हुआ। प्रारम्भ में वहाँ हाथी दाँत तथा सोना व बाद में गुलामों का व्यापार प्रमुख तत्व बन गया। विशेषकर 1650 ई. के बाद काफी वर्षों तक अफ्रीकियों को गुलाम बनाकर उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका में बेचा जाता रहा।

अफ्रीका के तटों पर नीग्रो लोगों से यूरोपीय (पुर्तगीज, डच, फ्रेंच तथा अंग्रेज) माल की अदला-बदली करते, वहां से गुलामों को लेकर अंटलांटिक पार कर इन्हें वहाँ बागानों तथा खादानों की औपनिवेशिक पैदावार से उनकी अदला-बदली करते, फिर इस माल को यूरोप में बेच देते। इस **'तिकोने व्यापार'** से होने वाले बेपनाह मुनाफे के ऊपर ही ब्रिटेन तथा फ्रांस की व्यापारिक श्रेष्ठता स्थापित हुई।

प्रारम्भिक यूरोपीय गवर्नर/प्रमुख व्यक्ति

पुर्तगाली

1.	वास्को डि गामा	: 17 मई 1498 ई. को कालीकट तट पर
2.	पेड्रो अल्बरेज केब्राल	: 9 मार्च 1500 को लिस्बन से भारत रवाना
3.	फ्रांसीसको-डी अल्मेडा	: 1505 ई. भारत में साम्राज्य स्थापना के निमित्त भेजा (प्रथम पुर्तगाली वायसराय)
4.	अल्फांसों-डी- अलबुकर्क	: 1509 ई. भारत में पुर्तगीज गवर्नर

नियंत्रण विधि तथा प्रक्रिया: उत्तमाशा अंतरीप के चक्कर काटते हुए **अब्दुल मनीद** नामक गुजराती पथ-प्रर्दशक की सहायता से **1498 ई. में वास्को-डि-गामा कालीकट (कप्पकडाबू)** में उतरा तो वहाँ बसे अरबी व्यापारियों की बस्ती ने उसके प्रति वैमनस्य का रवैया अपनाया क्योंकि इससे उनके व्यापारिक हितों पर बुरा असर पड़नेवाला था। किन्तु कालीकट के हिन्दू राजा, जिसकी पैतृक उपाधि **'जमोरिन'** थी, ने पुर्तगालियों का स्वागत किया। इन्हें काली मिर्च, जड़ी बूटियां तथा मसाले आदि ले जाने की स्वीकृति दी गई।

सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगालियों का मूल उद्देश्य **सैन्य बल के प्रयोग** द्वारा अपने देश तथा स्वयं को समृद्ध बनाना था। उनका एक दोहरा आम लक्ष्य था यूरोप को भेजे जाने वाले **'मसालों पर एकाधिकार'** करना तथा अन्य **एशियाई व्यापार पर नियंत्रण** करना एवं उससे कर वसूलना। हिन्द महासागर में नियंत्रण स्थापित करने में पुर्तगालियों ने प्रारंभ से ही बल प्रयोग किया। जमीन पर भारतीय शासकों, खासकर मुगलों की सैनिक शक्ति बहुत अधिक थी। मगर उनके मुकाबले मुट्ठी भर पुर्तगाली सैनिक और जहाजी समुद्र में अपनी स्थिति बनाये रखने में सफल रहे।

द्वितीय पुर्तगाली अभियान **9 मार्च 1500 ई.** में **'पेड्रो अल्बरेज केब्राल'** तेरह जहाजों के एक बेड़े का नायक बनकर लिस्बन से समुद्री मार्ग से भारत के लिए रवाना हुआ। पुर्तगालियों की पूर्वी समुद्र पर आधिपत्य की अनुचित महत्त्वाकांक्षा ने भारतीय शासकों के साथ, उनके सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्धों को समाप्त कर दिया। पुर्तगाली कारखानों ने शीघ्र ही दुर्गों का रूप धारण कर लिया। 1503 ई. में 'कोचिन' में बनाया गया छोटा सा दुर्ग भारत में उनका 'पहला दुर्ग' था। 1505 ई. में 'कन्नूर' (Connore) में दूसरा किला बनाया गया।

फ्रांसिस्को-डी-अल्मेडा (1505-09 ई.)

1505 ई. में ही **'फ्रांसिस्को-डी-अल्मेडा'** को **'प्रथम पुर्तगाली वायसराय'** बनाकर भारत में बाकायदा पुर्तगाली राज्य की स्थापना के निमित्त भेजा गया।

उसे निर्देश दिया गया कि वो ऐसे दुर्गो का निर्माण करे जिनका लक्ष्य सुरक्षा (आत्म रक्षा) न होकर, हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगालियों का नियंत्रण स्थापित करना हो। 1509 ई. में अल्मेडा ने गुजरात तथा मिस्र के संयुक्त समुद्री बेड़े को पराजित किया, जिसके परिणामस्वरूप पुर्तगाली नौ-सेना हिन्द महासागर में सर्वाधिक शक्तिशाली हो गयी। उसने शांतिपूर्वक व्यापार के लिए **'ब्लू वाटर पालिसी'** अथवा **'शांत जल नीति'** चलाई।

भारत में पुर्तगाली साम्राज्य की वास्तविक नींव रखने वाला **'अलफांसों -डी-अलबुकर्क'** प्रथम बार एक छोटे जहाजी बेड़े का नायक बनकर 1503 ई. में भारत आया था। 1509 ई. में उसे भारत में पुर्तगाली गवर्नर नियुक्त किया गया। **नवम्बर 1510 ई. में अलबुकर्क ने 'गोवा' के समृद्ध बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया**, जो उस समय बीजापुर के सुल्तान के अधीन था। बीजापुर के शासक यूसुफ आदिल शाह ने गोवा पर आक्रमण कर पुर्तगालियों को वहाँ से भगाया। किन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात अलबुकर्क में पुन: गोवा पर अधिकार कर लिया।

पुर्तगाली गोवा के समीप ही उसने मुख्य भूमि तक अपना आधिपत्य स्थापित किया और 'राजौरी' एवं 'दाभोल' के बीजापुरी बन्दरगाहों पर अधिकार कर बीजापुर के समुद्री व्यापार को बिल्कुल ठप्प कर दिया। अलबुकर्क ने अपने कार्यकाल में नगर के दुर्गों को मजबूत करने और उनके व्यापारिक महत्त्व को बढ़ाने की भरसक कोशिश की। एक स्थायी पुर्तगीज आबादी बसाने के लिए उसने पुर्तगालियों को भारतीय स्त्रियों से विवाह करने के लिए प्रोत्साहित किया लेकिन वह मुसलमानों के साथ शत्रुतापूर्ण बर्ताव करता था।

नवंम्बर **1510 ई. में गोवा पर अधिकार** के बाद **1511 में पुर्तगालियों** ने दक्षिण पूर्व एशिया की महत्त्वपूर्ण मंडी **'मलक्का'** पर नियंत्रण कर लिया। **1515 ई.** में फारस की खाड़ी के मुहाने पर स्थित **'हरमुज'** पर इन्होंने अधिकार कर लिया। ये तीनों नगर सामरिक तथा व्यापारिक दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण थे।

इस तरह से 1515 ई. में अलबुकर्क की मृत्यु के समय तक पुर्तगीज, भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण जल-शक्ति बन चुके थे तथा पश्चिमी समुद्र तट पर उनकी तूती बोलने लगी थी।

किन्तु कई प्रयासों के बावजूद भी पुर्तगाली **'अदन'** पर कब्जा नहीं कर सके, जो लाल सागर के व्यापार पर नियंत्रण की कुँजी था। सोलहवीं शताब्दी भर पुर्तगाली छिटपुट विजय प्राप्त करते रहे। धीरे-धीरे श्रीलंका के अधिकांश तटीय क्षेत्र पर इनका कब्जा हो गया।

नीनो डी. कुन्हा (1529-38 ई.)

इसने 1530 ई. में गोवा, को राजधानी बनाई। भारत में पुर्तगाली राज्य की औपचारिक राजधानी हो गया। इन्होंने **1534 ई. में 'बेसिन' या बसी** (Bassein) पर अधिकार कर लिया। अगले वर्ष **1535 ई.** में पुर्तगालियों ने **'दीव'** (Diu) ले लिया। **1559 ई.** में 'दमन' पर भी अधिकार कर लिया।

इन विजयों से गुजरात के विशाल समुद्री व्यापार पर नियंत्रण का लक्ष्य पूरा हुआ, साथ ही खम्भात की खाड़ी पर गश्त को भी अधिक प्रभावशाली बनाया जा सका।

ऐतिहासिक मानचित्रावली

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के वैकल्पिक विषय इतिहास के प्रथम प्रश्न पत्र के प्रथम खंड में मानचित्र आधारित प्रश्नों का वर्ष 2021 से 1995 तक के सिर्फ पूछे गये प्रश्नों का खंडवार संकलन

मानचित्र

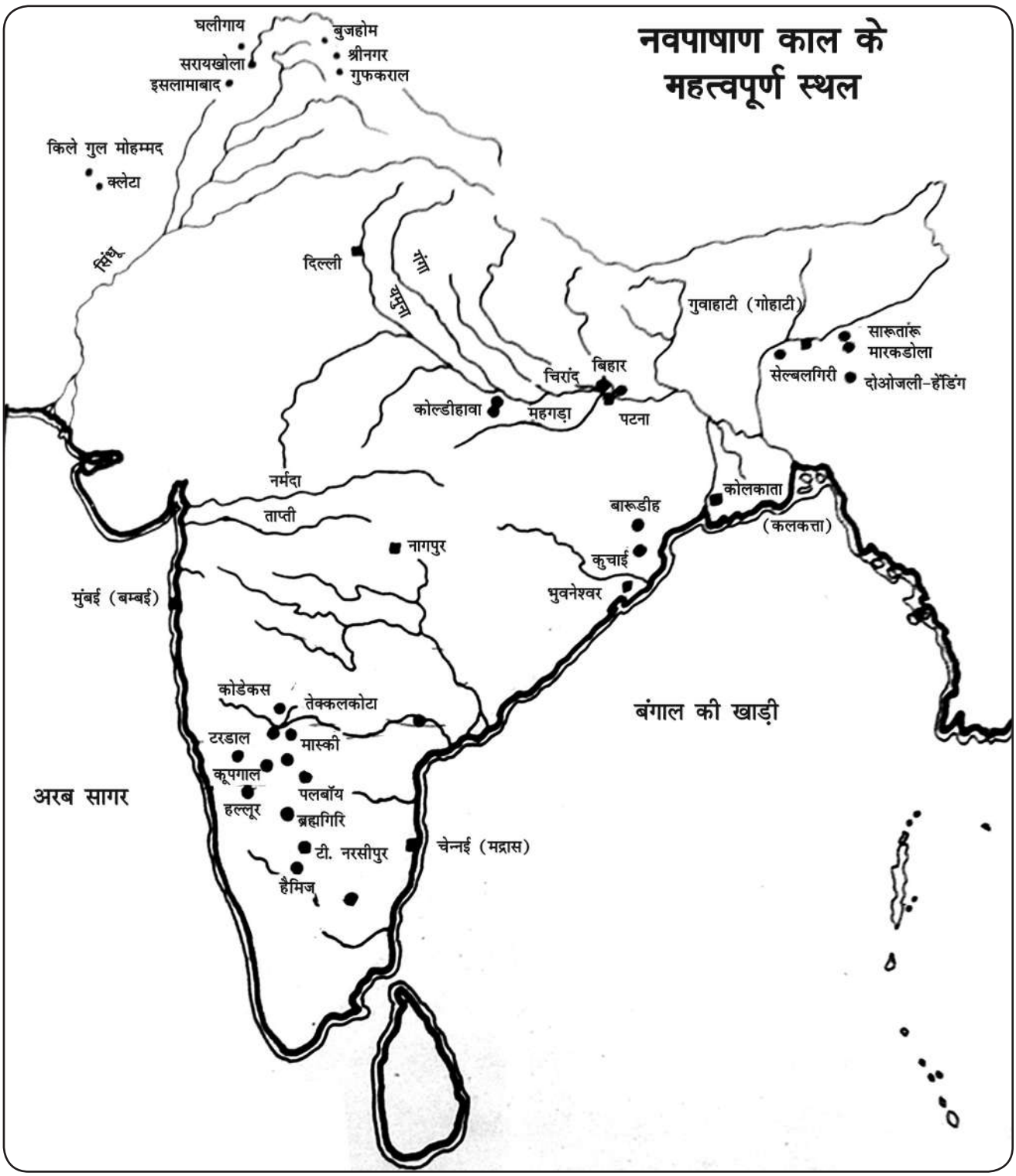
नवपाषाण काल के
महत्वपूर्ण स्थल
घलीगाय
बुजहोम
श्रीनगर
सरायखोला
गुफकराल
इसलामाबाद
किले गुल मोहम्मद
क्लेटा
सिंधु
दिल्ली
गंगा
यमुना
गुवाहाटी (गोहाटी)
सारूतारू
मारकडोला
सेल्बलगिरी
दोओजली-हेंडिंग
चिरांद
बिहार
कोल्डीहावा
महगड़ा
पटना
नर्मदा
ताप्ती
कोलकाता
(कलकत्ता)
बारूडीह
नागपुर
कुचाई
मुंबई (बम्बई)
भुवनेश्वर
कोडेकस
तेक्कलकोटा
बंगाल की खाड़ी
टरडाल
मास्की
कूपगाल
पलबॉय
अरब सागर
हल्लूर
ब्रह्मगिरि
चेन्नई (मद्रास)
टी. नरसीपुर
हैमिज